हजूर बाबा सावनसिंह जी महाराज के

जन्म दिवस भण्डारा समारोह की सत्संग सभा

(सत्संदेश अगस्त और सितम्बर, 1969 में प्रकाशित प्रवचन)

26 जुलाई शाम को महाराज जी का सत्संग व धर्माचार्यों के भाषण

अब के भण्डारा समारोह पर भरपूर वर्षा और असुविधापूर्ण मौसम के बावजूद इतनी भीड़ थी कि इससे पहले कभी इतना विशाल जनसमूह देखने में नहीं आया। भण्डारे पर यह बात स्पष्ट हो गई कि बढ़ती हुई संगत के लिये यह जगह भी अब पर्याप्त नहीं रही। 26 जुलाई के प्रमुख वक्ता ईसाई जगत के माने हुए प्रचारक, पादरी रेवरेण्ड अब्दुलहक साहब थे। उनके अलावा सिख समाज के धर्मगुरूओं और रूहानी सत्संग के प्रचारकों के भाषण हुए। हजूर महाराज ने दर्शनसिंह के कविता पाठ के पश्चात् यह प्रारंभिक वचन कहे।

''आज हम सब भाई और बहन इकट्ठे हुए हैं, किसी ख़ास मतलब के लिये। और वह ख़ास मतलब क्या है ? एक ऐसे महापुरूष, जो Recent (हाल के) ज़माने में आए, उनके जीवन से जो लोगों को परमार्थ लाभ मिला, उसके शुक्राने के लिये हम यहां इकट्ठे हुए हैं। महापुरूष हमेश आते रहते हैं। परमात्मा उनको भेजता रहता है, लोगों की हिदायत (मार्गदर्शन) के लिये, इंसान की फ़जीलत (महानता) को पेश करने के लिये। इंसान के दो पहलू हैं। बाहर यह जिस्मानियत का (शारीरिक) पहलू रखता है और अन्तर में यह चेतन स्वरूप आत्मा है। इंसान का दरजा सभी महापुरूषों ने सबसे ऊंचा माना है। सब वेद-शास्त्र, ग्रन्थ-पोथियां इस बात की ताईद (पुष्टी) करती हैं कि यह Highest rung in creation (सर्वश्रेष्ठ सृष्टि) है। यह (मानव जन्म) बड़े भाग्य से मिलता है। इसमें सबसे बड़ा काम जो हमारे सामने है, हम कर सकते हैं वह है, कि इसमें हम प्रभु को पा सकते हैं। यह काम और किसी योनी में हम नहीं कर सकते।

सर्व जून तेरी पनहारी, सर्व में तेरी सिकदारी।

सारी जूनें ऐ इंसान ! तेरी सेवा के लिये बनाई गई हैं ? यह मानव जूनी सबमें सरदार जूनी है। इसमें बड़ाई क्या हैं ? इसमें प्रभु को पा सकते हैं। सब वेद-शास्त्र, ग्रन्थ-पोथियां कह रही हैं कि, ''न वह इन्द्रियों से जाना जा सकता है, न मन से, न बुद्धि से,

न प्राणों से। उसको अगर अनुभव करना है तो केवल आत्मा ने करना है।'' कब ? जब यह अपने आपको जाने। सारे महापुरूष कहते हैं कि जिन्दगी मिली। इसमें अगर आपको, अपनी आत्मा को न जाना तो क्या फायदा ? What profits a man if he gains possessions of the whole world and loses his own soul ? अर्थात् क्या फायदा है, अगर तूने दुनिया के सारे पदार्थ प्राप्त कर लिये और अपनी आत्मा को खो दिया। आत्मा के बदले में कौन सी चीज ली जा सकती है ?

तो पहली बात, हमने अपने आपको (आत्मा को) जानना होगा, क्योंकि आत्मा ही परमात्मा को अनुभव कर सकती है। मगर इस वक्त यह मन-इन्द्रियों के घाट पर इनसे Identify (लम्पट) होकर जिस्म और जगत का रूप बन रही है, इतना कि यह अपने-आप को भूल चूकी है - उस प्रभु को कौन जाने ? तो पहले यह है, कि अपने आपको जानो। Know Thyself. ''इल्लते जुमला इल्महा ईंनस्तो ईं। ता तो दोनी मन कयम दर योमे दीं।'' अर्थात् सारे इल्मों का सार यह है कि तू जाने कि तू कौन है ? फिर कहा, ''कीमते हर कालह मीदानी कि चीस्त। कीमते खुद रा न दानी इब्लहीस्त।'' अर्थात् हरेक इलम के बारे में ए इंसान, तूने जान लिया है, और अपने आपके मुतल्लिक नहीं जाना तो तूने क्या जाना ?

अपने आपका अनुभव कैसे होता है ? एक तो Feelings (धारणा) दूसरे Inferences (निष्कर्ष निकालना बुद्धि विचार से) और एक है By Self-Analysis अर्थात् जड़ से चेतन को अलेहदा करके, पिण्ड से ऊपर आकर आत्मा को अपने असल रंग में देखना। हमसे (आत्मा से) यह जिस्म की मशीनरी चल रही है। अगर हम अपने आपको Concentrate (सुरति को एकाग्र) करके जिस इन्द्री से चाहें काम ले, जिससे चाहें न ले। अपने आपको जानने का यह मज़मून, जड़ से चेतन को अलेहदा करने का, एक Practical (करनी का) विषय है, जो किसी अनुभवी पुरूष के चरणों में जाकर ही प्राप्त किया जा सकता है। वह हमें इसकी Demonstration (साक्षात्कार) कराएगा। ''गुर प्रसादी आपन-आप बुझे।'' जब अपने आपको जानेगा तो देखेगा, कि जिस्म का यह मकान, जिसमें हम रह हैं एक विचित्र मकान है। It is a wonderful house we live in. इसमें कितने ही दरवाजे हैं - दो आंखों के, दो कानों के, दो नासिका के, मुंह और दो नीचे। इतने दरवाजे होते हुए भी इसमें रहने वाला बाहर भाग नहीं सकता। सांस बाहर जाता है, बाहर रह नहीं सकता - कोई ताकत उसको धकेल कर वापस ला रही है। शरीर की शोभा उस वक्त तक है जब

हम (आत्मा) इसके साथ हैं। और हम इसमें Controlled (बन्धे हुए) हैं। कोई पावर इसमें कायम रख रही है। इस शरीर में दो ताकतें काम कर रही हैं - एक हम, एक हमारा जीवनधार कंट्रोलिंग पावर, परमात्मा कह दो। तो इस शरीर में अगर हम अपने आपको जान लें तो जीवनाधार (परमात्मा) को जानने वाले बन जाएं। यह कैसे होता है ? इसके लिये महापुरूषों ने कई तरीके बताए हैं, प्रचलित किए हैं। बड़े योग सिस्टम हैं इसके लिये।

तो महापुरूष आए। इस मामले को बहुत सरल करके हमारे सामने रखते रहे, प्रचलित भाषा में, जो सहज सुलभ थी। और Practical way (साक्षात्कार) भी कराते रहे। तो वह नेचुरल अर्थात् स्वाभाविक तरीका है, जो हर कोई कर सकता है, आम लोग (जन साधारण) उससे फायदा उठा सकते हैं। इत्तेफ़ाक (संयोग) ऐसा हुआ कि मैं क्रिश्चियन स्कूल में पढ़ा था। बाद में भी मुझे ईसाई लिटरेचर (साहित्य) के अध्ययन का समय प्रभु की ओर से मिला। तो महापुरूषों ने बड़े सरल तरीके से पेश किया कि वह परमात्मा Word है, शब्द है, शब्द सदेह होकर ही उसका ताल्लुक (परिचय) दे सकता है। तो यह Inner way (अन्तर का मार्ग) जो है, जब जब महापुरूष आए हैं, उन्होंने पेश किया है। आज मुझे बहुत खुशी है कि ईसाइयत की मानी हुई हस्ती, हिन्दुस्तान में भी और बाहर भी आज तशरीफ़ लाए हैं। वह आपको पेश करेंगे कि अन्दरूनी (अन्तरी) रास्ता जो क्राइस्ट ने पेश किया है, वह एक ही रास्ता है, वह शब्द मार्ग है, Word का मार्ग है, सबके अन्तर में है। उससे कैसे Contact (जुड़ना) हो सकता है, इस पर प्रकाश डालेंगे। ग़ौर से सुनिये।

पादरी अब्दुलहक साहब का भाषण

यह हम सब जानते हैं कि मेल-मिलाप धर्म है, फूट और नफरत अधर्म है। मुझे पता लगे कि मेरे दो बच्चों में झगड़ा है, तो मुझे चैन नहीं आएगा, जब तक उनमें मेल न करा लूं। तो परमेश्वर, जो सबका पिता है, कैसे हो सकता है कि वह ऐसे धर्म हमें दे जो आपस में फूट डलवाएं ? धर्मों में भेद तो है पर ऐसा नहीं एक धर्म दूसरे को काटे। सूर्य के प्रकाश में सत रंग मिले हुए हैं, परन्तु जब उसका प्रतिबिम्ब पड़ता है तो वह सात रंग अलग-अलग दिखाई देते हैं। यही धर्मों का हाल है, किसी में कोई रंग प्रबल है, किसी में कोई, परन्तु हैं वह उसी सच्ची ज्योति की झलक, उसका प्रतिबिम्ब।

पादरी साहब ने कहा, कि सारी खराबियों की जड़ और हमारे स्वभाव का, हमारी नेचर

का बिगाड़। यह बिगाड़ कुछ तो हमारे कर्मों का परिणाम है, कुछ संगति का। परमेश्वर महापवित्र है, उसकी सृष्टि अपवित्र नहीं हो सकती। ईश्वर तो कारणों का कारण है। उसके और हमारे बीच में कई और कारण हैं, जैसे देश काल की भौगोलिक परिस्थितयां, माता-पिता से प्राप्त संस्कार व प्रकृति, और संगति का प्रभाव इत्यादि। इसका नतीजा है कि हमारा स्वभाव, हमारा मन बिगड़ा हुआ है। ताड़ मार करके उसे सत्संग, धर्मोंपदेश आदि सदकर्मों की ओर ले जाओ भी तो वह अवसर पाते ही वहां से भाग खड़ा होगा, क्यों कि उसकी रूचि नहीं है वहां। अच्छे कर्म करना भी इसका इलाज नहीं, क्योंकि खराबी की जड़ तो इच्छायें हैं। कर्म तो उन इच्छाओं का फल है, प्रकाट स्वरूप है। इशुमसीह ने इसी लिये कहा कि बाहर से कोई चीज़ मनुष्य को भ्रष्ट नहीं कर सकती। भ्रष्ट करने वाली वस्तु उसके अन्तर में है, बुरी इच्छा।

एक और चीज भी बिगड़ी हुई है। वह है बुद्धि। मन भ्रष्ट हो तो बुद्धि भी भ्रष्ट हो जाती है। इसी लिये अच्छी-अच्छी किताबें भी बुरा नतीजा पैदा करती हैं। जिसकी बुद्धि बिगड़ी हुई है उसको सब बिगड़े हुए दिखाई देते हैं। बुरे को सब में बुराई नज़र आती है। बाईबल में आता है कि जो अपने भाई से, जिसे वह देखता है, प्रेम नहीं कर सकता, वह अनदेखे परमेश्वर से प्रेम कैसे कर सकता है ? प्रेम नाम है स्वभाव की समानता का। सब मनुष्यों की एक जाति और प्रकृति है, फिर यह विरूद्धता क्यों ? यह झगड़े क्यों हैं ? यह स्वभाव के बिगाड़ का नतीजा है। कभी हो सकता है कि एक भेड़ घास खाए और दूसरी मांस खाए ? तो इंसान का मन बिगड़ा हुआ है और बुद्धि बिगड़ी है। जब तक इन विकारों से हम छूट न जाएं, परमात्मा से हमारा संबंध नहीं हो सकता। यह तो है Negative (नकारात्मक) चीज़। अब Positive चीज़ को देखें।

जिसको हम परमेश्वर कहते हैं, सब सहमत हैं कि वह असीम है, Limitless है। हमारी बुद्धि सीमित है, हम सीमाबद्ध हैं। हमारे लिये उस असीम को जानना, उस तक पहुंचना, असंभव है। बाइबल में थिमोसिस के पत्र में आता है, ''परमेश्वर उस ज्योति में रहता है जहां किसी मनुष्य की पहुंच नहीं। न उसे किसी ने देखा है, न देख सकता है। एक महान दार्शनिक ने लिखा है, ''मुक्ति है परमेश्वर के परमानन्द में जुड़ जाना।'' यह कैसे हो सकता है ? दो चीजें Parallel (समानन्तर) जा रही हों, चाहे उनमें एक इंच का भी अन्तर हो, वह इकट्ठी कभी नहीं हो सकतीं। जब परमेश्वर और मनुष्य में स्वभाव की समानता नहीं तो उसके परमानंद में इंसान कैसे जुड़ सकता है ?

अब या तो यह मानो कि इन्सान का ईश्वर से मेल नहीं हो सकता है। यदि हो सकता है तो कोई संगम है जहां वह मिल सकते हैं। तो बाइबल ने कहा कि या तो हम असीम हों, हमारी योग्यता असीम हो, तब हम उस असीम (प्रभु) को मिल सकते हैं, या वह असीम सीमाबद्ध होकर प्रकट हो, हमारे सामने। तीसरा कोई रास्ता नहीं। सीमाबद्ध और असीम में कोई Mediator हो, बिचवई हो। वह संगम है, जहां मिलाप हो सकता है। मनुष्य के रूप में उसका प्रकाश होना संभव माना जाए तो फिर मानवत्व और ईश्वरत्व इकट्ठे हो सकते हैं, अन्यथा नहीं।

रोशनी की साइन्स बताती है कि प्रकाश असीम है, सारे ब्रह्माण्ड में फैला हुआ है। मगर हम बत्तियां जगा लेते हैं। बत्तियों की रोशनी तो सीमित है, परन्तु प्रकाश असीम है। इसी प्रकार पंखों में चलने वाली हवा सीमित है, परन्तु हवा असीम है। परमात्मा सीमित नहीं हो सकता, वह असीम है। परन्तु उसका प्रकाश मनुष्य की योग्यता के अनुसार सीमित हो सकता है, अन्यथा हम उससे लाभ नहीं उठा सकते। क्योंकि लाभ पहुंचाने वाला लाभ उठाने वाले की योग्यता के अनुसार ही लाभ पहुंचा सकता है। तो परमेश्वर से मिलने के लिये कोई बिचवई चाहिये जो दोनों नेचर (प्रकृति) रखता हो, ईश्वरत्व भी और मनुष्यत्व भी। वह साथी भी हो हमारा, समकालीन भी हो, और अनादि काल से भी उसका सम्बन्ध हो, Eternity से भी उसका संबंध हो, Time (काल) से भी। वह हद से भी जुड़ा हो, बेहद से भी। दूसरी चीज़ है कि हमारा मन और बुद्धि शुद्ध हों। बाइबल में यूहन्ना का कथन आता है कि जो पेड़ अच्छा फल नहीं लाता, ईश्वर के न्याय के कुल्हाड़े से वह काटा जाएगा। साथ ही उपाय भी बताया कि अच्छे पेड़ के साथ उसे सांठ दिया जाये (पैबन्द लगा दी जाए) अर्थात् परमेश्वर का प्यारा विचवई जो है उससे उसे सांठ दिया जाए। उसे ईसाई धर्म में New Birth (नया जीवन) कहते हैं। इशु मसीह ने कहा, ''मैं अंगूर का पेड़ हूं। अगर तुम मेरी डालियां बन जाओ तो मेरा जीवन तुममें जाएगा। तुम शुद्ध हो जाओगे।''

आज कानून बढ़ रहे हैं, सज़ाएं बढ़ रही हैं, धार्मिक शिक्षा भी बढ़ रही है। परन्तु साथ साथ पाप भी बढ़ रहे हैं। तो सिद्ध हुआ कि ज्ञान और धर्मोंपदेश मन और बुद्धि को साफ नहीं कर सकते। उसका इलाज है नेचर या स्वभाव का बदलना। स्वाभाव के बदलने का उपाय परमात्मा के साथ संबंध के अलावा और कोई नहीं। और परमात्मा से संबंध असंभव है जब तक कोई बिचवई न हो। सन्त जी की आज्ञा का पालन करते हुए जितनी

मुझे समझ आई है उसके अनुसार मैंने थोड़े शब्दों में आपके सामने पेश कर दिया।

हजूर महाराज के वचन

पादरी अब्दुलहक साहब के भाषण की समाप्ति पर हजूर महाराज ने यह वचन कहे।

आपने बड़े अनमोल वचन सुने। पादरी साहब ने, जो बुनियादी तालीम (मूलभूत शिक्षा) महापुरूषों की रही है, उसे बड़ी सरल भाषा में पेश किया है। सबसे बड़ा इलाज आपने बताया कि ''जैसी सोहबत (संगति) वैसा रंग।'' इन्सान मुरक्कब (जोड़) है, आत्मा और देह का। जिनमें आत्म रंग है, और इन्सानियत (मानवता) दोनों रंग हैं, उनकी सोहबत में दोनों रंग मिल जाएंगे। सारे महापुरूषों ने थोड़े शब्दों में यही कहा, Word was made flesh and dwelt amongst us. अर्थात् वह शब्द सदेह हो गया और हम इंसानों के बीच आकर रहा (बाइबल)। और, ''गुर में आप समोए शब्द वरताया'' (गुरूवाणी), कि गुरू में वह प्रभु प्रकट होकर जीवों को अपने साथ जोड़ता चला जाता है। तो ऐसे महापुरूषों की सोहबत में, ''जैसी सोहबत वैसा रंग।'' इसी सिलसिले में कहा, "Wanted reformers, not of others but of themselves." अर्थात् हमें प्रचारकों की जरूरत है। दूसरों के नहीं, बल्कि अपने-आपके जो प्रचारक हों। पढ़ा सब कुछ। हज़ारों ग्रन्थ-पोथियां पढ़ डालीं। दिमाग को लायब्रेरी बना दिया। मगर हम में फर्क क्या पड़ा ? अगर उसके अनुसार हमारा जीवन पलटा नहीं तो क्या फायदा ? इंसानियत से इंसानियत आएगी। यह सबसे बड़ी बात है, जैसी सोहबत वैसा रंग। जिनमें आत्म रंग होगा, वहीं से आत्म रंग मिलेगा।

सुभर भरे प्रेम रस रंग। उपजे चाव साध के संग।

इसलिये कहा, ''गुरूमुख का मेल, साध का संग, नाम का रंग, सेई प्यारेया, मेल जिनां मिलियां तेरा नाम चित्त आवे।'' तो सबसे बड़ी बदलने वाली चीज सोहबत और संगति है। जैसी सोहबत वैसा रंग। जब Inner Change (अन्तर का परिवर्तन) हो तो दूसरा भी वैसा ही मालूम होता है। जैसी ऐनक हो वैसा नज़र आएगा। जब तक इसका Angle of Vision (दृष्टिकोण) बदलता नहीं, सारा जहान उसी रंग में नज़र आता रहेगा। हमने मानुष तन पाया है, बड़े भागों से। इसमें हमने प्रभु के रंग को पाना है। जिनमें वह रंग है उनको पूर्ण पुरूष कहते हैं। वह महापुरूष दुनिया में आते हैं। उनका Link (संबंध) होता है, बाहर से भी, अन्तरीय भी। जिस्मानी पहलू से उनमें इन्सानियत

की शान बरसती है। तो ऐसे पुरूष की सोहबत, जिसमें दोनों रंग हैं, आपको इस Level (स्तर) से उठाकर उस लेवल में ले जाएगी। इसकी शुरूआत कहां से होती है ?

Where the world's philosophies end there the religion starts.

(अर्थात् जहां दुनिया के फिलसफे खत्म हो जाते हैं, वहां परमार्थ की क, ख, शुरू होती है)। जब तक, ''इन्द्रियां दमन न हों, मन खड़ा न हो, बुद्धि भी स्थिर न हो'' - खाली कहने से बात नहीं बनती। जैसी सोहबत वैसा रंग। ''सुरति साध संग ठहराई, तो मन थिरता बुध पाई।'' तो सबसे बड़ा इलाज क्या है ? ''ऐसे सत्गुरू सों प्रीत कर जित गोबिन्द सों प्रीति उपजे।'' तो बड़ी खुबसूरती से पादरी साहब ने खोल-खोलकर इस बात को पेश किया। सारी ग्रन्थ पोथयां हमें बदल नहीं सकेंगी, खाली सुनने से। जिस तरह पहलवानी की किताबें पढ़ने ही से पहलवानी का शौक पैदा नहीं होता जितना कि पहलवान की सोहबत से। A strong man revels in his strength and a weaker man wonders how he got it (एक पहलवान ताकत के नशे में झूमता है और कमजोर आदमी देखकर हैरान होता है कि उसमें यह ताकत कहां से आई)? एक दिन में पहलवान नहीं बनता। जो आज सन्त है वह किसी दिन हमारी तरह था। जब तक आत्म रंग वाली हस्ती नहीं मिली, आत्म रंग नहीं मिलता। बड़ी साफ बात। कितना भी नेक इन्सान हो, फिर भी गिरेगा - मनुष्यता है ना ! मगर इसमें दो रंग परमात्मा ने रखे हैं, एक मनुष्यता का, दूसरा आत्मा का। आत्मा के लिहाज से बयान किया, ''कहु कबीर इह राम की अंश।'' जब तक यह अपने आप में जागता नहीं और ऐसे महापुरूष की जाग लगती नहीं, तब तक काम नहीं बनता। पादरी साहब का दिली शुक्रिया है। यह प्यार रखते हैं।

(पादरी साहब को जाना था। वह हजूर महाराज से आज्ञा लेकर चले गये। इसके बाद रूहानी सत्संग कानपुर के सरदार अमरसिंह ओबराय और दिल्ली के एक प्रमुख सत्संगी ने पूरे गुरू की महिमा का बखान किया और महाराज कृपालसिंह जी के बारे में अपने निज अनुभव बयान किए। जिसके बाद हजूर महाराज जी ने गुरू के विषय पर स्पष्टीकरण के लिये यह शब्द कहे)।

हजूर महाराज का स्पष्टीकरण

अगर गुरू शब्द की समझ आ जाए तो सब यह भुलेखे (भ्रम) दूर हो जाएं। असल में परमात्मा ही गुरू है, शब्द ही गुरू है। जो Word है, वही गुरू है। वह न कभी मरता है, न

कभी जन्म लेता है। वह पावर सब घट-घट में है। ''सब्बो घट मेरे साइयां सुन्जी सेज न कोय। बलिहारी तिस घट के जा घट परगट होए।'' वह पावर समय-समय पर Manifest होती (अर्थात् अपनी झलक दिखाती) रहती है, मुख़तलिफ़ (विभिन्न) Poles (मानव शरीरों) में। मैंने अमारीका में Talk दी थी, 25 दिसम्बर को, Christ lived before Jesus. क्राइस्ट पावर कहो, गाड पावर कहो, गुरू पावर कहो, वह परमात्मा इज़हार में आई ताकत जो है (प्रकट प्रभु सत्ता) उसको गुरू कहते हैं। जब जब वह मानव देह पर प्रकट होती है, वह अपनी झलक दिखाती है, कभी एक जगह, कभी दो जगह। अरे भाइयो, जो आपको आज कुछ मिल रहा है, वह शब्द पावर की कृपा है, जो हजूर में थी। वही आज काम करती है, किसी और शकल में। वह Manifest (प्रकट) होती है किसी शकल में, जिसमें वह मौजूद है, किसी मानव देह पर वह काम करता है।

मैं पाकिस्तान में गया। वहां मुझे एक सूफ़ी मिला। तीन चार साल से वह मराकबा (समाधि) करता रहा। कहता था, एक सिख की शकल आती है (मराकबे में)। लाहौर आया। कहने लगा, तीन साल पहले यह सिख मुझे अन्तर में आए। यह बड़ाई परमात्मा की है। वही गुरु है। जब किसी को उसके पाने की ख्वाहिश (इच्छा) होती है, जिस मानव देह में वह प्रकट होता है, वह शकल सामने आ जाती है। बनानी नहीं पड़ती। No visualisation, No Premeditation. वह अपने आप आता है। खुदा वही है जो खुद आए। तो भाइयों, यह जलवा (प्रकाश) हजूर की कृपा से है। मेरा तो ऐसे ही नाम बदनाम हो रहा है।

(इसके बाद पीलीभीत के श्री बलबीर और सिख समाज के एक प्रसिद्ध प्रचारक के भाषण हुए और श्री राजाराम जी मेहता पानीपत वाले ने कविता पाठ किया। तत्पश्चात् श्री हजूर महाराज ने सत्संग प्रवचन किया)।

हजूर महाराज का सत्संग प्रवचन

महापुरूष दुनिया में आते रहते हैं। सारा जहान उनको देखता है। मगर जैसे वह होते हैं वैसे कोई कोई देखता है। ''शुनीदा अम के तोए दीदा अन्द बसे।'' सुना है कि तुझे बहुत सारे लोगों ने देखा। ''वले आँचुनां के तुई आँचुनां न दीद कसे।'' मगर जैसा तू था वैसा किसी किसी ने देखा। किसने देखा ? जिसको उसने दिखाया। गुरू को कौन जान सकता है ? ''वली रा वली मी शनासंद।'' (अर्थात् वली को वली ही जान सकता है)।

या जितनी वह किसी को झलक दे दे। यों तो वह इंसानी शकल रखता है। मगर उस इंसानी शकल में भी इंसानियत की शान बरसती है। पहली शान क्या है ? कि इंसान इंसान सब एक हैं। पहले इंसान, पैदा होते। पीछे जो कुछ बना सो बना। वह हमने बनाया, चाहे वह नास्तिक है या अनास्तिक, या किसी एक समाज का लेबल लगाया है, या दूसरी का, इंसानियत में कोई फ़र्क नहीं। तो परमात्मा के जो गुण होते हैं, उसमें (महापुरूष में) वह इज़हार करता (झलक दिखाता) है। हरि को तो हमने देखा नहीं। हरि के गुणों को जानना हो तो हमने देखा नहीं। हरि के गुणों को जानना हो तो क्या करना चाहिये।

हर के गुण हर भाँवदे से गुरू ते पाए।

जो हरि के गुण हैं, उनको समझना है, क्योंकि हरि के गुण ही उसको (हरि को) भाते हैं। मगर उन गुणों को कौन जाने ? जिसके अन्तर वह प्रगट हो, जिसने उसको पाना हो। मिसाल के तौर पर एक असामी खाली है। अर्ज़ियाँ छाँटने वाला है। उसका Handwriting (लेख) अच्छा है। जिनका लेख अच्छा है वह अर्ज़ियां निकालकर अलग रखता जाता है। जो गुण उसमें हैं, जब किसी और में पाता है तो वह व्यक्ति उसको भा जाता है। परमात्मा का गुण सबसे बड़ा क्या है ? जो उसको नहीं मानता है, और जो उसको मानता है, दोनों से प्यार है, सबको रोज़ी देता है। इसकी एक झलक हमारे हजूर के जीवन में आई। मरी पहाड़ में थे, एस.डी.ओ. लगे हुए। वहां एक तपेदिक का रोगी पहाड़ पर रहने के लिये गया ताकि सेहत अच्छी हो जाए। किसी ने उसे जगह न दी, कि यह तपेदिक का रोगी है और फिर नास्तिक है। वह हजूर की कोठी में भी आया, मगर, आप उस वक्त कोठी में नहीं थे। बाबू गजासिंह थे वहां। उनसे बात हुई। मालूम हुआ तपेदिक (क्षय) का रोगी है, फिर नास्तिक है। जगह मांगता है। उन्होंने भी ना कर दी। जब वह वापस जा रहा था तो उधर से हजूर आ रहे थे। पूछा, यह कौन था ? कहने लगे (गजासिंह) वह नास्तिक है, फिर तपेदिक का मरीज़ है। जगह मांगता है। किसी ने जगह नहीं दी। फिर तूने क्या कहा ? कहने लगा, मैंने भी न कर दी। तो फरमाया, कि वह परमात्मा को नहीं जानता, हम तो जानते हैं कि वह प्रभु की अंश है। उसको जगह दे दी। बात समझे ? तो उनका सबसे प्यार था। कितना बड़ा जुल्म है, हम अपने आपको, अपने जीवनाधार को भूल गए।

कीमते हर कालह मीदानी कि चीस्त। कीमते खुदरा नदानी इब्लहीस्त।

उनके दरबार में हिन्दू, मुस्लिम, सिख, ईसाई, सब आते थे। कई बार झाड़ू बरदार

जो थे वह सबसे आगे आ बैठते थे। एक बार कुछ आर्य समाजी भाइयों ने कहा, ''आप यह द्वैत (ऊंच-नीच की) उड़ा दो।'' कहने लगे, ''हमने द्वैत आगे ही उड़ाई हुई है। जो जहां चाहे आकर बैठ जाए।'' वह भाई कहने लगे कि लंगर से भी इसको उठा दो। हजूर ने फरमाया, ''लंगर पकता एक ही जगह है। क्योंकि राजपूत लोग दूसरों से नफ़रत करते हैं इसलिये अलेहदा खिला देते हैं। आप लोग यह भेदभाव उड़ा दो, हमारा तो पहले ही उड़ा हुआ है।'' तो महापुरूष जब आते हैं, वह सबके लिये आते हैं। पहली बात। उनका क्या मज़हब होता है ? जिस्मानी तौर पर जिस घराने में पैदा होते हैं उसका लेबल होता है। आखिर इंसान Social being (मिल जुलकर रहने वाला प्राणी) है। वह समाज बनाकर रहेगा। एक बार हजूर से पूछा गया कि आप कौन हैं ? (धर्म के लिहाज़ से)। तो फरमाया, परमात्मा हिन्दू है तो मैं हिन्दू हूं, सिख है तो मैं सिख हूं, मुसलमान है तो मैं मुसलमान हूं, ईसाई है तो मैं ईसाई हूं। मनुष्य की जाति कौन सी है ? न हिन्दू, न मुसलमान, न सिख, न बौध, न जैन, न ईसाई। और आत्मा की जाति क्या है ? जो परमात्मा की। ''कहु कबीर इह राम की अंश।'' और सबका जीवनधार वही एक (परमात्मा) है।

सैकड़ों आशि हैं दिलराम सबका एक है।
मज़हबों-मिल्लत जुदा हैं काम सबका एक है।

दशम गुरू साहब ने फरमाया, जब भ्रम उठ गया तो कहां का हिन्दू, कहां का तुर्क ? यह तंगदिली और तंगनज़री हमने बनाई। यह जितने मज़हब बने, यह हमारी तंगदिली का नतीजा है। एक आदमी उठा। एक ने कहा, तौहीद है, सिवाय ब्रह्म के और कुछ नहीं। एक ने उसको Qualify कर दिया (उसके साथ विशेषण लगा दिया), एक ने और Qualify कर दिया। जो उनके अनुयायी बने वह अलेहदा समाज बन गई। आखिर यह उसी (प्रभु) का इज़हार (प्रकट स्वरूप) है। अनुभव की बात जैसी-जैसी की, वह अलेहदा-अलेहदा स्कूल खड़े कर लिये। तास्सुब और तंगदिली से भाई-भाई के प्याले जुदा हो गए। नहीं तो उसके ज़ियाफ़तखाने (अथिति गृह) में एक ही साकी है, वही एक पिलाने वाला है, और नाम की शराब चलती है। हमारे हजूर से एक बार पूछा गया था कि महाराज मर्दुम शुमारी में क्या लिखाएं ? कहने लगे, जो हिन्दू है, हिन्दू लिखाओ, जो मुसलमान हैं, मुसलमान लिखाओ, जो ब्राह्मण है ब्राह्मण, क्षत्रीय है क्षत्रीय और सिख है वह सिख लिखाओ। तो कौन-सा मज़हब हुआ उनका ? हमारे वतन (सैयद कसरां) में एक बार वह गए थे। उन दिनों आपको पता है, बड़ी मुखालिफ़त हुआ करती थी। बड़ा

लम्बा चौड़ा किस्सा है। संक्षेप यह कि गुरूद्वारे में बहुत लोग इकट्ठे हुए और दिल में धार किया कि अगर सचमुच यह महात्मा हैं तो बिन बुलाए गुरूद्वारे में चले आएंगे। हजूर बाहर सैर से आए। सुबह का वक्त था। मेरे दो भाई भी थे साथ। जो रास्ता गुरूद्वारे को जाता था, वहां खड़े हो गए। कहने लगे, ''कृपालसिंह ! गुरूद्वारे चलें।'' मैंने कहा, चलिये। मेरे सबसे बड़े भाई (प्रेमसिंह) कहने लगे, नहीं महाराज, वहां तो बड़ी मुख़ालिफ़त है। मैंन कहा, तुम्हें यह इंसान नज़र आते हैं ? चले गए। वहां दरख्तों पर भी आदमी थे, छतों पर भी। यह लोग बड़े मर्यादा पुरूषोत्तम होते हैं। जाकर मत्था टेका, बैठ गए। सिख मर्यादा तो थी ना ! एक भाई उठा। कहने लगा, हमको एक शंका थी, वह तो हो गई दूर, कि आप जानीजान (अन्तर्यामी) महापुरूष हैं। अब हमारे दो सवाल हैं। उनका जवाब दें तो बड़ी कृपा होगी। मैंने हजूर की तरफ देखा। कहने लगे, नहीं कृपालसिंह, मैं आप जवाब दूंगा।

सवाल करने वाले ने पूछा, ''तुम कौन हो ? तुम्हारा इष्ट कौन है ? तुम अपने को गुरू कहलवाते हो ? इन सवालों का जवाद दो।'' उस वक्त पहली बार हजूर ने खड़े होकर जवाब दिया था। कहने लगे, ''मुझे बड़ी खुशी है, कि आज इतनी उम्र में, पहली बार मुझसे पूछा जाता है कि मैं कौन हूं ? मैं आपको खुशी से बतलाता हूं कि मैं सिख मर्यादा में हूं। सिख मर्यादा के मुताबिक सारे कर्म करता हूं। पहली बात। मेरा इष्टा गुरू ग्रन्थ साहब है (यह लफ्ज़ थे)। मगर यह गुरू ग्रन्थ साहब एक और गुरू की खबर देता है जो सारे जहान का गुरू है। 'बाणी गुरू, गुरू है बाणी, विच बाणी अमृत सारे।'' और –

बाणी वज्जी चौजुगी सच्चो सच्च सुनाय। और, – गुप्ती बाणी प्रगट होवा।

मैं उसको गुरू मानता हूं। वह साहब उठे तो थे काट करने के लिये, पर कहने लगे, ''पहली बात जो इन्होंने कही है वह बिल्कुल ठीक कही। दूसरी बात जो कही, वह बिल्कुल सोलह आने सही है।'' नीचे जो लोग बैठे थे, कहने लगे, ''अरे भई क्या कहते हो ? तुम तो विरोध करने के लिये खड़े हुए हो।'' सच बड़ी चीज है। वहां एक सिख उपदेशक था, भाई लालसिंह। कोयटा से आया था। दशम गुरू साहब की तारीफ में भाई नन्दलाल साहब ने जो कहा वह सारी तुकें हजूर महाराज की तारीफ में उसने पढ़कर सुनाई। अब आपको मालूम हुआ वह कौन थे ? सिख थे। सिख मर्यादा थी। इष्ट गुरू ग्रन्थ साहब था। मगर यही इष्ट एक और गुरू के बारे में बतलाता है जो सारे जहान का गुरू है। शब्द गुरू है। बाणी गुरू। और गुरू सदेह शब्द है, सदेह बाणी है। Word made flesh है। फिर क्या कहते हैं। ''विच बाणी अमृत सारे।'' अमर जीवन देने वाली है वाणी। आगे कहते हैं, ''गुरूबाणी कहे सेवक जन माने प्रतख गुरू निस्तारे।'' गुरूबाणी

अर्थात् महापुरूषों की बाणी कहती है कि अगर सेवक बन जाए, वह क्या कहती है ? कि प्रत्यक्ष गुरू की जरूतर है। यही भाई गुरदास ने कहा। क्या ?

वेद ग्रन्थ हट्ट है जितलग भवजल पार उतारा।
सत्गुर बाझ न बुझिये जिचर धरे न गुर अवतारा।

कैसा सत्गुरू ? जो हमारी तरह इंसान है। बात समझे ? लोग पूछते हैं हजूर का मत क्या था ? यह उसका जवाब है। मुझे एक चिट्ठी कलकत्ते से आई थी कि हम राधास्वामी मत की हिस्ट्री लिख रहे हैं। आप अपना जीवन, हजूर महाराज का, बाबा जी का, स्वामी जी का, सबका लिखकर भेजो। मैंने कहा, अगर मत की हिस्ट्री आप लिख रहे हो तब तो स्वामी जी महाराज का भी नाम आप न लिखो। उन्होंने साफ कहा था, ''मेरा मत तो सत्नाम अनामी का है। राधास्वामी मत राय शालिगराम का चलाया हुआ है। इसे भी चलने दो।'' इसका यह नहीं मतलब की बुरा कहा है उसे। यह भी चलने दो। Sanction is there. क्यों ? कि वह तालीम जो गुम हो रही थी, स्वामी जी ने ताजा की, Renew की। क्योंकि राय शालिगराम बड़े गुरू भक्त थे, उन्होंने प्रभु के नाम के साथ लफ्ज़ राधा और रख दिया। स्वामी तो गुरू को कहते हैं। और न ही बाबा जी का और हजूर का नाम लिखो। आगरे वालों से पूछो अगर मत की हिस्ट्री लिखना चाहते हों। यह मेरा जवाब है।

आज मैं यह क्यों कह रहा हूं ? यह ख़ाहमख़ाह के झगड़े उठाए जा रहे हैं। अरे गुरू का कोई मत नहीं। उसका मत है परमात्मा। वह इंसानी जामे (चोले) में खुद खुदा है। He is God in man. ''पांच तत्त का पुतला गैबी खेले मांहि।'' गुरू नानक साहब ने यह जवाब दिया था। यह बाहर जो लेबल लगाए हैं समाजों के, यह मुबारिक हैं। वही समाज अच्छी जिसमें ज्यादा तायदाद में कैरेकृर वाले लोग हों। वही समाज अच्छी जिसमें बहुत सारे लोग प्रभु को पा जाएं। कौन-सा स्कूल और कॉलेज अच्छा है ? जिसमें बहुत सारे लड़के पास हो जाएं। लैकचर भी अच्छे हों, हाल भी अच्छे हों, प्रापेगण्डा भी बड़ा हो, और लड़का पास कोई न होता हो ? क्या फायदा।

तो यह था हजूर का मत। वह सबसे प्यार रखते थे। हिन्दू आए, मुलसमान आए, सिख आए, ईसाई आए। वह कहते थे, अपनी-अपनी समाजों में रहो। पहला कदम तुमने उठाया है (किसी समाज में प्रवेश पाने का) मुबारक। इंसान मिल जुलकर रहने वाला प्राणी है। कोई न कोई समाज बनाकर रहेगा। एक तोड़ोगे, दूसरी समाज बनानी

पड़ेगी। लाहौर का वाकिया (वृत्तान्त) है। कम्यूनिस्ट पार्टी के आदमी थे। उन्होंने हरेक मज़हब वाले को दावत (निमंत्रण) दी और चैलेन्ज किया कि तुम साबत करो कि समाजों की जरूरत है। बड़ा दिलचस्प मज़मून था। मैं भी आगे बैठा था। एक भाई उठा। सिख था। उसने पांच कक्के साबत किए। हिन्दू भाई ने बोदी चोटी साबत (प्रमाणित) की। मुसलमान ने ख़तना साबत किया, ईसाई ने Annointment साबत किया और बैठ गए। वह उठा (सभा जिसने बुलाई थी)। भाइयो, आपने सारी बातें सुन लीं। शादी करनी है। मतलब यह कि पवित्र हाथों से, अपने इष्ट को सामने रखकर, दो-चार सौ आदमियों के सामने कह देना कि आज से इनका ताल्लुक जायज़ (उचित) है। क्या फर्क पड़ता है कि एक किताब रख ली या दूसरी ? ऐसी दो चार मिसालें (उदाहरण) देकर उसने सब पर पानी फेर दिया।

मैं आगे बैठा था। उठ खड़ा हुआ। मैंने कहा, भाई साहब, आपने जो कहा, ठीक कहा। मगर मैं आपसे एक बात कहता हूं। अगर आपके ख्याल के चालीस या पचास हजार हो जाएं, तो आप एक सोसायटी बनाओगे कि नहीं ? उसके कायदे-कानून बनाओगे। फिर आपको मालूम होगा कि यह कायदा ठीक नहीं तो उसमें तरमीम (संशोधन) करोगे। क्यों न जिस समाज में तुम हो और जो बहुत समय से कायम है, उसी में रहो। जो असल ग़रज (यथार्थ उद्देश्य) है किसी समाज में दाखिल होने का, अपने आपको जानना और प्रभु का पाना, उस ग़रज का पाओ। वह कहने लगा, आपने ठीक कहा। नास्तिक होता हुआ भी वह हमेशा कायल रहा।

हजूर ने सबसे बड़ा काम यह किया। शुरू तो हुआ गुरू अर्जुन साहब से, अमली तौर पर, और गुरू नानक साहब और कबीर साहब ने उसकी बुनियाद रखी, कि इंसान-इंसान सब एक हैं। ''न हम हिन्दू, न मुसलमान। हम दोनों को एको जान।'' गुरू नानक साहब ने यही कहा, ''न हम हिन्दू न मुसलमान। अल्लाह राम के पिण्ड-प्राण।'' उन्होंने (मुसलमानों ने) कहा, अच्छी बात है, हमारे साथ नमाज़ पढ़ोगे। मगर नमाज़ उन्होंने नहीं पढ़ी। वह कहने लगे, तुम कहते हो, ''पूजा नमाज़ ओही। दूसरो न भेद कोई।'' तो नमाज़ क्यों नहीं पढ़ी ? कहने लगे (गुरू नानक साहब), ''मैं किसके साथ पढ़ता ?'' कहने लगे, मौलवी साहब पढ़ा रहे थे। फरमाया, ''मौलवी साहब तो इस फिक्र में थे कि घर में बछेरी कुंए में न गिर जाए।'' काजी साहब ने कहा, ''मेरे साथ पढ़ लेते।'' कहने लगे, ''तुम तो घोड़े खरीद रहे थे।'' कहने लगे, ''सच कहो तुम हो कौन ?'' कहने लगे -

हिन्दू कहां ते मारिये मुसलमान भी नांहि। पांच तत्त का पुतला ग़ैबी खेले मांहि।

तुम शकल पर मुझे हिन्दे समझ रहे हो। हिन्दू बाना है मेरा, मैं हिन्दू नहीं। मुसलमानी तुम चिह्न-चक्रों को समझ रहे हो, वैसा मुसलमान भी मैं नहीं। पांच तत्वों का पुतला यह शरीर है। इसमें ग़ैब (अदृश्य) की जो ताकत खेल रही है, वह मैं हूं। यह है मत सन्तों का, हमेशा से रहा है। इसी अमली शकल हजूर ने अपने वहां भी रखी थी। जब उनका अन्त समय आया - अप्रेल में चोला छोड़ा था - दिसम्बर में यह स्कीम उन्होंने पेश की थी। उन्होंने यह रूहानी कालेज या सत्संग का नाम तजवीज़ किया था। यह 1947 ई. की बात है। हजूर ने हिदायत की कि एक ऐसी ग्राउंड बनाओ जिसमें हरेक आदमी अपनी-अपनी समाज में रहे, अपने-अपने चिह्न-चक्र रखे, अपने-अपने बोले अर्थात् सम्मान सूचक वाक्य (नमस्ते, राम-राम सलामालेकुम आदि) रखे। बाहर के समाजों के रस्म-रिवाज को न छेड़ो। उसमें रहकर नेक-पाक सदाचारी बनें, और दूसरी चीज, अपने आपको जानें और प्रभु को पाएं।

आपको पता है, थोड़े लफ़्ज़ों में, हजूर ने क्या नई चीज की ? नई चीज कोई नहीं की। जितने महात्मा आए हैं, सबने यही कहा कि मैं वही कह रहा हू जो आगे कहते रहे। कन्फ़यूशियस आए, और महापुरूष आए। उन्होंने यही कहा कि हम वही बात कह रहे हैं। मगर हम भूलते रहे, महापुरूष आकर उस तालीम को ताज़ा करते रहे। वह क्या तालीम थी जो उन्होंने पेश की ? कि इन्सान के दो पहलू हैं। एक बाहिरी, एक अन्तरी। बाहिरी लिहाज़ से यह इन्सान है। इसमें इन्सानियत की शान बरसनी चाहिये। इन्सान वही है जो दूसरे के लिये जीता है। इन्सान वही है जो प्रेम और मोहब्बत का पुतला है। और अन्तर से यह आत्मा है। इसकी जाति वही है जो परमात्मा की है। इसकी शान आत्मा की शान है। जिस्म को खुराक दी, जिस्मानी पहलवान बने। बुद्धि को खुराक दी, बुद्धि के पहलवान बने। और आत्मा को क्या खुराक दे रहे हो ? आत्मा चेतन-स्वरूप है। उसकी खुराक महाचेतन प्रभु से जुड़ना है। क्राइस्ट ने कहा है अपने आपको, "I am the bread of Life." अर्थात् मैं जिन्दगी की रोटी हूं। गुरूवाणी में भी यह आया है। फिर कहा -

This bread of life has come down from heaven. Whosoever partakes of it shall have everlasting life.

यह रोटी आसमानों से आती है। जो इसको खाएगा, हमेशा की जिन्दगी को पा जाएगा। फिर एक बार कहा, Drink me and eat me. कि मुझे खाओ और पियो।

लोगों ने कहा, कैसे खाएं ? एक बार पहले उन्होंने कहा था, Word was made flesh and dwelt amongst us. यह लोग सदेह शब्द होते हैं । शब्द को खाओ, शब्द को पियो । गुरू नानक साहब का जिक्र आता है, एक मुरदा था । भाई लेहना को कहा, इसको खाओ । उसका मतलब यही था । किस्सा कहानी और तरह बन गई । बात समझे हो ? हजूर का मत क्या था ? पहला जवाब । उन्होंने क्या चीज की ? एक चीज की । बाहर तो सब कहते हैं, अन्तर की जो चीज़ थी गुप्त, जिसको हम भूल चुके थे, उसको फिर ताजा किया । वह क्या ? यह मानुष देह बड़ा विचित्र मकान है जिसमें हम रह रहे हैं । इसमें हम भी रह रहे हैं, हमारा जीवनाधार भी रह रहा है ।

गुरू नानक साहब गए ईरान में तो काज़ी रूकुनुद्दीन ने सवाल किया कि आपने खुदा का घर देखा होगा । कैसा है ? जो जिस्म का बयान किया । फरमाया, उसके 12 बुर्ज हैं, 6 हाथों के 6 टांगों के जोड़ । उसके 52 किंगुरे हैं, 32 दांत और 20 नाखून । इसमें दो बारियां (खिड़कियां) लगी पड़ी हैं - दो आंखें । फिर फरमाया ।

उच्चे ख़ासे महल दे बांगां दये खुदा । निभागी खल्कत सो रही रहया खुदा जगा ।

तो कहते हैं, Body is the temple of God यह शरीर हरिमन्दिर है, जिसमें उसकी ज्योति जगमगा रही है । यह चीज हम भूल रहे थे, इसको हजूर ने ताज़ा किया । ''गुरूमुख होए सो काया खोजे ।' और, ''काया कामन अति सवालेयो पिर वसे जिस नाले ।'' वह काया रूपी स्त्री अति सुन्दर है, जिसमें उसका पति परमात्मा प्रगट है । बल्ब वही जिसमें लाईट जगे । है सबके अन्तर में, मगर फैलाव के सबब से बाहर से रोशनी अन्तर से अंधेरा है । महापुरूष जब आते हैं तो क्या करते हैं ? They are the Light of the world. वह दुनिया को रोशनी देने आते हैं । जो कोई उनके पास जाए - Will never walk in darkness (वह अंधकार में नहीं चलते) । उन्होंने बड़ी छोटी सी मगर पते की बात कही । जिस्म में सबसे ऊंचा दरजा किसका है ? आंखों का । क्यों साहब ? बाकी इन्द्रियां तो सब नीचे हैं । इसका दरजा ऊंचा इसलिये रखा कि इसका जो काम है, वह भी ऊंचा है । हमारी रूह का बसेरा कहो, ठिकाना कहो, दो भ्रु मध्य, पीछे है, जैसा गीता में कहा । जहां मरकर रूह (आत्मा) का Drop Scene (जीवन नाटक समाप्त) होता है । मरता है आदमी, बाहर से सुरति हटती है, तो पहचानता नहीं किसी को । नीचे चक्र टूटते हैं, कण्ठ बजता है, आंखें फिर जाती हैं । यह आंखें बड़ी कीमती हैं । अगर इन आंखों के पीछे सफर करो तो मानुष जन्म पाकर जिसको पाना चाहते हो, उसको, परमात्मा को, पा

जाओगे। तुलसी साहब ने फरमाया -

पुतली में तिल है, तिल में भरा राज़ कुल का कुल।
इस परदए सियाह के ज़रा पार देखना।

यहां, दो भ्रु मध्य आंखों के पीछे, तिल है। इसमें कुल का राज़ (भेद) भरा है। इसको Penetrate करो, इसके पार जाओ। लोग भजन करते हैं, अंधेरे में बैठते हैं, थोड़ा आनंद लेते हैं। इससे आगे नहीं जाते। इसलिये तुलसी साहब ने कहा कि किसी मुर्शिद रसीदा के पास पहुंचो। पहली बात। वह अंधेरे में प्रकाश, Radiance को प्रगट कर देगा। The very silence of the heart will become vocal, sprout forth into light. (अर्थात् हृदय की स्थिरता होगी, चुप की जमीन बनेगी, तो उसमें ज्योति का विकास होगा और ध्वनि जारी हो जाएगी)। मौजूदा हालत में चूंकि इन्द्रे बाहर खुले हैं, बाहर के संस्कार आ रहे हैं। अभी पादरी साहब ने कहा था, ''दर काअरे दरिया तख्ता बन्दम् करदई। बाज़ मी गोयम के दामन तरमकुद हुशियार बाश।'' कैसे निकले इससे ? जब तक तुम इन्द्रियों के घाट पर हो, मन-बुद्धि के द्वारा नहीं निकल सकते। मौलाना रूम साहब ने कहा कि हम कैदी हैं। कैदखाने से निकलना हो तो छत में सुराख करके निकल जाओ। यहां दो भ्रु मध्य, जहां रूह का ठिकाना है। इसके पार जाने के साधन सब योगों में हैं। हठयोग में 6 घक्रों को तय करके वही, कुंभक करके वही। बाहरमुखी क्रियाएं तो नेक कर्म हैं। उसमें मैं-पना बना रहता है। मैं-पना बना रहे तो आना-जाना बना रहेगा। जहां पर रूह का ठिकाना है (दो भ्रुमध्य) वहां पर जाओ। वहां से तुम सारी मशीनरी को चला रहे हो। हमसे ही मन ताकत लेता है, हमसे ही बुद्धि ताकत लेती है, हमसे ही इन्द्रियां ताकत लेती हैं। मगर उलटा काम बन रहा है। इन्द्रियों को भोग खींच रहे हैं, मन को इन्द्रियां खींच रही हैं, बुद्धि पर मन सवार है।

तो इसलिये कहते हैं, अपने आपको जानो। Know Thyself. सुरतिवन्त बनो। जब जाहो किसी इन्द्री से काम लो, चाहो न लो। मगर यह कैसे हो ? सैकड़ों वर्ष योगियों ने लगाए। याद रखो आलम (विद्वान) तुमको इल्म (विद्या) दे सकता है। डॉक्टर चीर-फाड़ करके शरीर के हिस्सों की Demonstration (अनुभव) दे सकता है। और अनुभवी पुरूष तुमको Self-Analysis (जड़ से चेतन को पृथक करने की) Demonstration (व्यक्तिगत अनुभव) प्रदान कर सकता है। ''गुरू प्रसाद आपन-आप बुझे।'' अपने आप आपको बूझना तो मन बुद्धि के Level (स्तर) पर है, Feelings (धारण) से है,

Emotions (भावना) से हे, Inferences (बुद्धि-विचार से निष्कर्ष निकालने) से है, जिसके लिये कहा, Feelings, emotions and inferences are all subject to error. Seeing is above all. अर्थात् इन सब में भ्रम की संभावना है। देखना सब से ऊपर है।

अनुभवी पुरूष तुमको बिठाएगा, पहले ही दिन Way up करेगा, पिण्ड से ऊपर लाएगा रूह (आत्मा) के ठिकाने पर, थोड़ी देर के लिये। तो आगे क्या है ? परमात्मा इज़हार में आई ताकत (व्यक्त प्रभु-सत्ता) के दो पहलू हैं, ज्योति और ध्वनि। खैर यह मज़मून बड़ा लम्बा है। तो सारे महापुरूषों की बुनियादी तालीम (मूलभूत शिक्षा) यही है। मगर उसमें यह बड़ाई है कि पहले दिन ही तुमको कुछ पूंजी दे देता है। किसी महापुरूष की बड़ाई इसी में है। ''भाई रे कोई सत्गुरू सन्त कहावे, नैनों अलख लखावे।'' मैंने भी बड़ी किताबें पढ़ीं, लायब्रेरियां पढ़ीं, सब ग्रन्थों-पोथियों के अनुवाद पढ़े, मगर ज़िन्दगी की गुत्थी हल न हुई। Background (पृष्ठभूमि पिछले संस्कारों की) थी। एक नशा सा बना रहता था। मगर कभी-कभी दो-चार महीने के बाद नशा टूट जाता था। बड़ी परेशानी होती थी उस वक्त। एक महात्मा के पास गए कि महाराज यह तकलीफ है, अगर आप इसका कोई उपाय कर सकें। कहने लगे, सीस देना पड़ेगा तुमको। मैंने कहा जो खुद सीस का भूखा है, वह क्या देगा ?

मैंने प्रभु से प्रार्थना की कि हे प्रभु ! मैं जानता हूं कि गुरू के बिना गति नहीं। मगर मैं किसी ऐसे के पास पहुंच जाऊं जो तुझ तक न पहुंचा हो, तो मेरा जीवन तो बर्बाद चला गया। मैंने लगातार प्रार्थना की कि आगे ध्रूव भक्त को, प्रहलाद भक्त को तू बिना किसी माध्यम के सीधा प्रगट हुआ, तो अब क्यों नहीं हो सकता ? तो फिर अन्तर में एक शकल आनी शुरू हुई। मैं उसके साथ Traverse (चढ़ाई अन्तर दिव्य मण्डलों की) करता था। उन दिनों Great war (प्रथम विश्व महायुद्ध) का ज़माना था। मैं मैसोपोटामिया में था। मैंने समझा वह स्वरूप गुरू नानक साहब का है। कई नज्में (कवितायें) मैंने लिखी। मैं दरियाओं का बड़ा शौकीन था। पानी में बैठे रहना या दरिया के किनारे। पेशावर में पानी के किनारे रहे। काबुल में लुण्डा दरिया, फिर जेहलम के किनारे रहे, फिर रावी के किनारे रहे। एक दिन ब्यास गए, दरिया देखने के लिये। वहां उतरे ब्यास स्टेशन पर। वहां बुआदास स्टेशन मास्टर थे। मैंने पूछा दरिया किस तरफ है ? कहने लगे, सन्तों से मिलने आए हो ? मैंने कहा, यहां सन्त भी रहते हैं ? कहने लगे, हां, बिल्कुल दरिया के किनारे। वहां पहुंचे। देखा तो वही थे।

तो मैं कह रहा था कि अनुभवी पुरूष ही अनुभव दे सकता है। जिसे दिली ख्वाहिश है उसे देखने की, वह प्रभु आप Manifest (प्रकट) होता है। बनाने से नहीं बनता। खुदा वही है, जो खुद आप आए। सात साल पहले (शारीरिक भेंट से) वह अन्तर में आते रहे। तो उन्होंने कहा कि एक कामन ग्राऊंड (सांझी भूमि) बनाओ। उन्होंने क्या तालीम दी ? Where the world's philosophies end there the religion starts. (अर्थात् जहां दुनिया के सारे फलसफ़े खत्म हो जाते हैं वहां परमार्थ की क, ख, शुरू होती है)। यहां (दो भ्रू मध्य) आने के लिये सैकड़ा बरस योगियों ने लगाए। उन्होंने पहले दिन ही वहां आने का व्यक्तिगत अनुभव दे दिया। यही तारीफ़ है सत्स्वरूप हस्ती की।

भाई रे कोई सत्गुर सन्त कहावे, नैनों अलख लखावे।
और, – **परदा दूर करे आखन का, निज दरसन दिखलावे।**
साधो सो सत्गुर मोहि भावे।

अक्षरों का बताना क्या है ? वह तो हमारे हजूर फरमाया करते थे, पांच साल की चरख़ा कातने वाली लड़की भी बता सकती है, कि यह मंत्र का जाप करो, वह करो। ठीक है। पहला कदम है। मगर एक होती है गुरूमुख भक्ति। ''गुरूमुख भक्ति जिस सहज धुन उपजे।'' और कहा —

गुरमुख भक्ति करो सद प्राणी। हृदय प्रगास होय लिव लागे।

प्रकाश हो। तो अनुभवी पुरूष ही तुमको अनुभव दे सकता है। जैसे पादरी साहब कह रहे थे, जिसके अन्तर प्रभु प्रगट नहीं, वह तुमको कैसे अनुभव दे सकता है। ''गुर में आप समोए शब्द वरताया।'' तो हजूर हमारे इसके (परमार्थ के) बड़े भारी Giant थे। छोटी सी एक बात बताऊं। मेरा लड़का छोटा-सा था, तीन-चार साल का। हजूर को जाकर कहने लगा, महाराज, मुझे भी नाम दो। कहने लगे, हां बच्चा देंगे। दिन को आना। गया। मिठाई दे दी। दूसरी बार फिर गया कि महाराज मुझे नाम दो। फिर मिठाई दी तो कहने लगा, यह नहीं। मुझे वह नाम दो जो मेरे बाबू जी को दिया है। कहने लगे, अच्छा बैठ जा। तवज्जो दी। आसमान, तारे आ गए। भागा-भागा आया, ''बाबूजी, बाबूजी मुझे तो तारों तक नाम मिला है, आपको कहां तक मिला है ?''

अरे जो सुरति को बाहर से हटा सके, इन्द्रियों के घाट से ऊपर लाकर पूंजी दे सके, यह किसी समर्थ पुरूष की कहानी है। ऐसे महापुरूष आते रहते हैं। आगे भी कामयाब (विरले) थे, आज भी कामयाब हैं। नायाब (अलभ्य) नहीं। इन्द्रियों के घाट की भक्ति

नेक कर्म है, नेक फल मिलेगा। उसमें मैं-पना बना रहेगा। उपनिषद कहते हैं, ''नेक कर्म और पाप कर्म, जीव को बांधने के लिये दोनों समान हैं जैसे लोहे की बेड़ी हो या सोने की बेड़ी।'' अनुभवी पुरूष से ही अनुभव मिल सकता है। ऐसे महापुरूष जब दुनिया में आते हैं तो रूहानियत (अध्यात्म) का सैलाब (बाढ़) सा आ जाता है। मुबारिक हैं जिनको उस हस्ती के चरणों में बैठना नसीब हुआ, जिसकी याद में आज हम बैठे हैं। हजूर कराची गए। अमरीका वालों ने टिकट भेजा कि हजूर, आप एक बार यहां फिर जाओ। कहने लगे, ''कृपालसिंह ! मैंने टिकट वापस कर दिया है, और यह लिख दिया है, कि मैं नहीं आऊंगा। तुम हो आना।'' बात समझे हो ? आज हम बैठे हैं उस हस्ती की याद में। यह चीज हमको मिली, अब तक मिल रही है। Be the worthy sons of the father. हमको उनका फख़र (गर्व) है, क्या उनको भी हमारा फख़र है ? इसीलिये मैं आपको ताकीद करता हूं कि डायरियां रखो। जिस कालेज से बहुत सारे डिग्री लेकर निकलें वही कालेज अच्छा है। जिनको नहीं मिली चीज उन बेचारों का क्या कसूर ? जिनको मिली है और फिर फायदा न उठाएं तो कितनी बदबख्ती (दुर्भाग्य) है। आज मैं फिर ताकीद करूं कि आज ही से डायरियां रखो। दो-ढाई घंटे दस्वंध (दशांश) दो (भजन के लिये) न बने, उसका इलाज है। न करने का कोई इलाज नहीं। यह चीज नई नहीं, हमेशा से, परम्परा से चली आई है। हरेक समाज में महापुरूष आए हैं। उनकी बुनियादी (मूलभूत) तालीम यही रही है। आपने किताब Naam or Word पढ़ी होगी। उसमें हवाले (उदाहरण) दिए हैं। पूर्व और पश्चिम में, सबमें यही तालीम है। वह चीज तुमको मिल चुकी है। क्राइस्ट ने कहा कि जो चीज़ तुम देखते हो, पुरातन Prophets (अवतारों) ने देखना चाहा और न देख सके, और जो तुम सुन रहे हो, वह सुनना चाहते थे, मगर न सुन सके। कहते हैं, जो चीज़ तुमको मिली है, छतों पर खड़े होकर, पुकार कर कहो। आपको किसी को शक है कि चीज़ नहीं मिलती ? आकर साफ कहो। वह तभी है कि चीज लेकर उसे रख न दो। उसकी कमाई करो। हजूर फरमाया करते थे कि दवाई ली, खाई नहीं। जाले में रख दी। बीमारी कैसे जाएगी ? वक्त का फायदा उठाओ। Time and tide wait for no man. (अर्थात् समय और नदी की लहर किसी की प्रतीक्षा नहीं करते) रोटी न खाओ जब तक भजन न कर लो। पूंजी तुम्हें मिली हुई है। उसको बढ़ाओ। किसी कारण Darkness हो गई है, सियाही का परदा फिर गया है Evil thoughts (बुरे विचारों) से, तो आकर बैठो। इसमें मेरी खुशी है। तुम मुझे खुश करना चाहते हो ना, हजूर के जन्म दिन पर ? करना चाहते हो तो हाथ खड़ा करो। सब करना चाहते हो। तो आज से डायरी रख लो। ढाई घंटा रोज़ भजन बैठना शुरू कर दो। न बने तो आकर बैठो। ❑

जुलाई का जन्मदिवस भण्डारा समारोह

27 जुलाई सुबह का समागम, भजन की बैठक तथा सत्संग सभा

(27 जुलाई को प्रात: 7 बजे भण्डारा समारोह की परम्परा के अनुसार दो-तीन हज़ार नर-नारी इस स्वर्णिम अवसर पर अपार दयामिहर की लूट से लाभ उठाने के लिये भजन बैठे। हजूर महाराज ने लोगों को भजन पर बिठाने से पहले यह वचन कहे।)

आप बड़े भाग्यशाली हो कि मानुष जन्म आपको मिल चुका है। इसमें बड़ाई किस बात की है ? एक ऐसा काम इसमें हम कर सकते हैं जो किसी और जूनी में नहीं कर सकते। और वो क्या है, कि हम कभी प्रभु की गोद में थे, जब से आये अभी तक वापस नहीं गये, नहीं तो किसी और रंग में बैठे होते। तो प्रभु को पाने के लिये हमें पहले अपने आपको जानना होगा, क्योंकि न वो इन्द्रियों से जाना जाता है, न मन से, न बुद्धि से, न प्राणों से। उसको अगर अनुभव करना है तो केवल आत्मा ने करना है। Light knows the light हम चेतन स्वरूप आत्मा हैं। हम हैं आत्मा-देहदारी, मगर मन के साथ लगकर जिसम और जगत का रूप बन बैठे हैं, इतना कि हम अपने आपको भूल चूके हैं। यह जिसम की जितनी भी कृया है (मशीनरी), यह हमसे ही चल रही है, हम इसके चलाने वाले हैं। पर हम भी इसको उस वक्त तक चला सकते हैं, जब तक हम इसमें कायम (स्थित) हैं। कोई और ऐसी चीज है, ताकत है, जो हमें बांध रही है, हमारे कर्म के अनुसार। जब यह सिलसिला (कर्मों का) खत्म होता है, तब हमें जाना पड़ता है। उस जाने से पहले अगर हम अपने आपका अनुभव कर लें, तो प्रभु को इसी मानव देह में ही पा लें, तो कहां जायेंगे ? उसकी गोद में ही जायेंगे। अपने आपका जानना कैसे हो सकता है ? आपने मरते आदमी देखें हैं कई बार। पहले तो मरने वाला दूसरों को पहचान नहीं सकता। उसकी सुरति कहो, Attention कहो, बाहर से हट जाती है, फिर शरीर से हटती है, नीचे हिस्सा बेहिस होता है। कण्ठ बोलता है, आंखें फिर जाती हैं, दो भू मध्य-पीछे, फिर ड्राप सीन होता है। रूह का ठिकाना आंखों के पीछे है। हम यहां से (दो भ्रू मध्य-पीछे) सारे जिस्म को चला रहे हैं परन्तु आज तो हम इसीका (शरीर का) रूप बने बैठे हैं। इसको बाहर से हटाना होगा। रूह का मरकज़ (केन्द्र) जो है, वहां वह जीवन आधार जो हमको इसमें कायम रख रहा है, उसका अनुभव होगा। बात समझ आई ?

अब आप सब बहन-भाई भजन बैठ जाओ, जिस तरह आपको विधि बताई जाएगी।

किसी आसन पर बैठ जाओ, जिस पर ज्यादा देर तक बैठ सकते हो। अकड़ कर न बैठो। नरम बैठो। और सीधे बैठो। Quite relaxed but straight जब बैठ जाओ तो हिलो-डुलो नहीं। न हाथ हिलाओ, न सिर, न पैर न मुंह न आंख। आंखें बन्द करके थोड़ी देर बाहर का ध्यान छोड़ दो। ये भी भूल जाओ कि कहां बैठे हो। आंखों से नीचे इस शरीर में ध्यान न दो। इस पर पहली रूकावट मालूम होती है, सांस चलता हुआ मालूम होता है। सांस के चलने का ध्यान नहीं करो। करोगे तो क्या होगा ? फिर कुम्भक करना होगा, वह योगियों का मार्ग है, बड़ा लम्बा। सांस के चलने का ध्यान नहीं करो, चलने दो जैसा कि अभी नहीं मालूम होता है। रूह ने सिमट कर दो-भूमध्य (आंखों के पीछे) आना है। चढ़ने का ख्याल नहीं करो। चढ़ने का करोगे तो शरीर भारी मालूम होगा, तकलीफ होगी, रूह ने पिंड को छोड़कर दो भ्रूमध्य (आंखों के पीछे) आना है।

आपने क्या करना है, बाहर का ध्यान न करो, यह भी भूल जाओ कि कहां बैठे हो। आंखों के नीचे जिस्म में क्या होता है, होने दो। सांस के चलने का ध्यान न करो, चढ़ने का ध्यान न करो। करो क्या ? आंख बन्द करके अंधेरा नजर आता है। कोई चीज अन्तर से उस अंधेरे को देखती है। यह (बाहरी) आंख तो बन्द है। उसे अन्तर की आंख कहते हैं, शिव-नेत्र कहते हैं, दिव्य चक्षु कहते हैं। Third eye, Single eye कहते हैं। तो अन्तर की आंख से अंधेरे को देखो, सारा नहीं देखो, केवल दो भ्रूमध्य में देखो। बड़े गौर से देखो, पूरा ध्यान लगा कर देखो, एक टक देखते जाओ, जैसे बच्चा देखता है, गौर से, बारीक बीनी से पूरी तवज्जो लगाकर - लगातार देखते जाओ। Fix your gaze आंख बन्द कर लो। बात समझे। सुमिरण का एक-एक अक्षर ठहर-ठहर कर सोचो, ताकि ध्यान न हटे। आपका काम सिर्फ इतना ही है, बाकी सब गुरू पावर पर छोड़ दो। अगर पंद्रह बीस मिनट लगातार देखते जाओगे, लगातार गौर से एक टक देखते रहोगे जैसा कि बच्चा देखता है, वृत्ति अन्तरर्मुख होगी, वहां पर प्रकाश होगा। परमात्मा ज्योति स्वरूप है ना।

ज्योति हूं प्रभु जातना बिन सत्गुरू बूझ न पाए।

ज्योति का जो विकास है ना, यही उसका दर्शन है। उसकी Light आयेगी ना ! किसी किसम की Light आये, वो दर्जे बदर्जे है। पहले थोड़ा-सा प्रकाश आये, उसके बीच में लगातार देखो, फिर आसमान, तारे सूरज चल पड़ेंगे। जैसे कहता हूं वैसे बैठ जाओ। आंखें बन्द कर लो, बहार ध्यान न दो बाहर क्या है।

सब भाई बहनों को हजूर ने आकर सवा घंटे के बाद भजन से उठाया और पूछा कि उन्होंने अन्तर में क्या देखा। पहले पूछा गया कि किन बहन-भाइयो को अन्तर में गुरू स्वरूप आया है - हजूर बाबा सावनसिंह जी महाराज का या मौजूदा गुरू सन्त कृपालसिंह जी महाराज का। पांच सौ से ऊपर बहन-भाइयो ने हाथ खड़े किए। 7-8 सौ बहन-भाइयों को सूर्य और चांद की तेज़ रोशनी और इतने ही लोगों की हल्की रोशनी आई। इस प्रकार दो हजार से ऊपर लोगों को अन्तर्मुख आत्मानुभव की पूंजी हजूर महाराज की दयामिहर से मिली। भजन के सिलसिले में हजूर महाराज ने यह वचन फरमाये।

भजन के बाद हजूर के वचन

सूरज की रोशनी आई ''तत्तसवितुर वरेण्यम्'' हो गया, गायत्री मंत्र हो गया आपका। क्यों भाई ? गायत्री मंत्र में यही आता है न ''तत्तसवितुर वरेण्यम्''। आगे छोटी उमर के बच्चों को गायत्री मंत्र देते थे, और इसका अनुभव करा देते थे। आजकल बड़ों-बड़ों को नहीं। जिनको तेज रोशनी सूरज की आई है तो उसमें ध्यान टिकाओ। वह तेज होकर फटेगी। आगे स्वरूप आयेगा। जिनको हल्की रोशनी आई है, लाल रंग की, सूरज जैसी, उसमें ध्यान टिकाओ। वह तेज होकर फटेगी, फट कर आगे रस्ता चल पड़ेगा। जिनको चांद की रोशनी सफेद तेज आई है उसमें ध्यान टिकाओ, उसमें स्वरूप आ जायेगा। हल्की आई है तो उसमें ध्यान टिकाओ, वह तेज होगी फिर आगे स्वरूप आएगा। जिनको आसमान आया है, उसमें ध्यान टिकाओ तो तारे आयेंगे। तारे आते हैं, तो उसमें मोटा तारा आयेगा उसका जिकर सब महापुरूषों ने किया है। उसको पार कर चांद आयेगा।

जो भाई या बहनें ठीक तरह से न बैठे हों, वह फिर ठीक तरह से बैठें। हर रोज दो ढाई घंटे बैठो, दसबंद देना चाहिये ना। 24 घंटे का दसबंद ढाई घंटे हुआ, कम से कम इतना तो वक्त दो। इस भजन के बनने के लिये जीवन का पवित्र होना निहायत जरूरी है। संयम का जीवन बनाना होगा उसके लिये। आपको डायरी की हिदायत दी गई थी। डायरी में सबसे बड़ा साधन यह है कि आदमी बाकायदा हो जाता है। फिर साथ ही जीवन की पड़ताल रखता जाये, अपनी खामियों (त्रुटियों) को निकालता जाये, फिर भजन करता जाये। कुछ अंतर से, कुछ बाहर से, जल्दी तरक्की हो जावेगी। जिन भाई बहनों ने अभी तक डायरी नहीं रखी है, वो जरूर रख लें। नहीं तो दिन मनाने की कोई गर्ज नहीं। असल मंत्र यही है। बाकी लेक्चर, कथा, ज्ञान वो समझने के लिये है कि क्या

करना है ? जो मक्खन है न, वो आपको मिल चुका है। यह रूह की गिज़ा है। जिसका भजन नहीं बना, हजार मत्थे टेको, हजार सिर मारो, हजार गाने बजाने करो, जब दरख्त में फल ही न पड़े, उसका क्या फायदा। जिस दरख्त में फल नहीं पड़ता है वो काट दिया जाता है। क्यों साहब ? मानव जन्म से फायदा यही है कि तुम्हारे अंदर प्रभु प्रकट हो। उसके प्रकट होने की यही निशानी है कि ज्योति का विकास हो। 'ज्योति हूं प्रभु जातना।' अगर यह नहीं हुआ तो समझो अभी फल नहीं आया। बात समझ आ गई ? आज से आप सब भाई और बहनें, वैसे तो मैं (आपको) हमेशा कहता हूं, मान जाओ। कहते कहते आज बीस साल हो गये। बीस साल में आदमी कितनी किताबें पढ़ जाता है भाई। M.A. डबल M.A., Ph D. कितना। एक एक साल में एक-एक जमात भी पास करे तो। क्यों जी ? इतने सालों में कितनी जमातें पास होंगी भाई ? खुशी की बात इसमें है कि आप दिन दिन तरक्की करो, कि जो चीज मिली है, वह तुम्हें मुफ्त मिली है। तुम लोगों को कोई कदर नहीं है। कदर करो, यही तुम्हारे साथ जाने वाली है।

तोशा बांधो जीया का ऐत्थे ओथो नाल।

यह जिन्दगी का तोशा है, Bread of life है, यह आपको मिल रही है। हमारे हजूर की दया है। जब तक आत्मा को खुराक न मिले, आत्मा की खुराक क्या है ? परमात्मा से मिलना। जो जुड़ा है वो अपनी जान तुमको देता है, माफ करना।

जन्म मरण दोऊ में नांहीं जन पर उपकारी आये।
जिया दान दे भक्ति- लायन हर स्यों लैन मिलाये।

वो आते हैं महापुरूष, भेजे जाते हैं, दुनिया की Guidance के लिये, वह रास्ता बताने के लिये, भवसागर के पार ले जाने के लिये। वो क्या करते हैं। वो नूर मुज्जसम (सदेह ज्योति) होते हैं। They are the light of world. वो दुनिया को रोशनी देते हैं। जिसमें नूर खुद नहीं है, दूसरों को क्या देगा ? दीवे से दीवा जागता है, जिसका दीवा खुद जगा नहीं है वो दूसरे का दीवा क्या जगायेगा ? सन्त अपनी जान तुमको देते हैं ''जीया दान दे भक्ति लायन' प्रभु से तुमको जोड़ते हैं। 'हर स्यों लैन मिलाय' प्रभु से तुमको जोड़ते हैं। 'हर स्यों लैन मिलाय।' आप बड़े भाग्यशाली हैं जिनको ये चीज़ हजूर की कृपा से मिली है। उसको बढ़ाओ। ये मामूली चीज़ नहीं, ये ही असल चीज़ है। सारे ग्रन्थ-पोथियों का सार, सारे जपों तपों का सार, सारे साधनों का सार है कि यह अन्तर की

आंख बने, उसको देखने वाला बन जाय।

'जब देखा तो गावा तो गावे का फल पावा'

जो देखकर गुणानुवाद गाते हैं वो कुछ और हैं और जो -

''बिन देखे सालाहना अंधा अंध कमाय''

जिसने देखा नहीं, वैसे ही गुणानुवाद गाता है, सिर मारता है, नाचना है, टापता है, वो ऐसे है, जैसे एक अंधा है, जिसने सूरज को देखा ही नहीं और कहता है सूरज चढ़ा पड़ा है। सूरज को देखा ही नहीं तो गुणानुवाद कैसा ? वो देखने वाली आंख कौन बनाता है ?

सत्गुरू मिले तां अक्खी वेखे।

वो आंख बनाता है जिससे वो नज़र आता है। दिव्य-चक्षु को खोलता है। इतना ऊंचा ले जाता है।

एवड ऊंचा होय को, जिस ऊंचे को जाने सो।

जितना वो अति सूक्ष्म और अगम है, तुमको ऊपर लाकर थोड़ा दर्शन या पूंजी दे देता है। ये चीज किसी कीमत पर नहीं मिलती। आपको भागों से मिल चुकी है, जिनको मिली है उसका पूरा फायदा उठा लो। इसी जन्म में फैसला करना है। मनुष्य जन्म बार-बार नहीं मिलता। बात समझ आई ? यह असल तत्व की चीज है जो आपके सामने रखी गई। इसी के बनने के लिये आप सब इकट्ठे हुए हैं। उस महापुरूष का जन्मदिन मनाने के लिये, जिसने अपने जिन्दगी का दान देकर हमें जीवन दिया है। कबीर साहब ने कहा कि मेरे दिल में ये हूक उठी कि गुरू को क्या नज़राना दूं ? तन दे दो, जान दे दो, जहांन सब कुछ दे दो, तो भी उसका शुकराना नहीं हो सकता है। नेक पाक जीवन रखो, सत्संग में जाओ, पूरा वक्त दो, ताकि अगले साल तारीखी लिहाज से जब हजूर का फिर जन्मोत्सव मनाया जाय तो आपको भी एक जमात आगे कर दिया जाये। भजन सिमरण में तरक्की से मेरा यह तात्पर्य है, जैसे स्कूल में पास होने पर बच्चे को एक जमात से पास करने पर अगली जमात में बैठने का मौका दिया जाता है। ये भी हजूर की लगाई जमात है।

जो गुरू के सामने ही गुरू का कहना नहीं मान सकते, फिर कब करोगे भाई ? जो

बच्चा स्कूल में जाता है, चार, पांच, छह घंटे स्कूल में पढ़ता है, घर में भी दो चार घंटे पढ़ाई में लगाता है, तब साल में एक जमात चढ़ता है। आप अंदाजा लगाओ कितने घंटे भजन करते हो। क्यों ? भजन करोगे तभी काम बनेगा न। मैं जब हजूर के चरणों में गया था तो मैंने पूछा था कि कितने घंटे देना चाहिये। गौर से कान खोलकर सुन लो। मैं नौकर था। फरमाया, छह घंटे कम से कम, और जितने ज्यादा तुम दे सको। बात समझे ? तो टाइम Factor जरूरी है। आधा घन्टा या इससे कम देने पर क्या बनेगा ? आधा घन्टा से काम न बनेगा। ख्याल ही नहीं टिकता। इसलिये भाइयों पूरा वक्त दो। वक्त दोगे तो ही तुम्हारा यहां आना सफल होगा। ये चीज आपको हजूर की बख्शिश से मिली है। पूरा पूरा फायदा उठा ले।

जब लग न देखूं अपनी नैनी, तब लग न पतीजूं गुरू की बैनी।

जब तक इन्सान अपनी आंखों से न देखे काम नहीं बनता। नाम देने के वक्त कुछ पूंजी दी जाती है, रोज भजन करके उसको बढ़ओ। वो दिनों दिन बढ़ेगी।

श्री दीनानाथ दिनेश का भाषण

सुबह की सत्संग सभा में बाहर से आए महानुभावों में सबसे पहला व्याख्यान गीता के सुविख्यात व्याख्याकार श्री दीनानाथ जी दिनेश, जो आकशवाणी पर प्रवचन देते रहते हैं, उन्होंने दिया। पण्डित जी ने कहा, ''लावते ज्ञानम् तत्पत्रा।'' अर्थात् जब ज्ञान मिला तो तत्पत्रा अर्थात् मस्ती आ गई। अरे जब ''मन मस्त हुआ तो क्या बोले। हंसा पाया मानसरोवर ताल-तलैय्या क्या डोले।'' जब मन में मस्ती आ गई तो न देखने की बात रह जाएगी, न सुनने की। तो क्या रह जाएगा ? ''आत्मने आत्मा।'' अपनी आत्मा में हम सन्तुष्ट हो जाएंगे। हममें और गुरूदेव में जो दुविधा का भाव है वह मिट जाएगा। हम आत्मा बन जाएंगे। हम गुरु बन जाएंगे, हम ही शिष्य बन जाएंगे। यह जो काम है, अपने आपका, अपने स्वरूप का साक्षात्कार, दर्शन करा देना, यही गुरू का काम है। इस काम को पूरा किए बिना परमात्मा का संबंध होते हुए भी वह संबंध आपका टूटा रहेगा। आत्मा और परमात्मा के इस संबंध को गुरू गठबंधन कर देगा, जोड़ देगा, और आप आत्मारूप परमात्मा हो जाएंगे।

मैं आप लोगों के सौभाग्य की सराहना करता हूं कि आपको ऐसे पूर्ण गुरू मिले (हजूर बाबा सावनसिंह जी) और ऐसे ही यह महाराज जी (सन्त कृपालसिंह जी) जो आत्मा का

साक्षात्कार कराते और आत्मा-परमात्मा का संबंध जोड़ते हैं। आज अखबारों में दो ही चर्चाएं हैं, एक यह कि इंसान चांद पर चढ़ गया, दूसरे बैंकों का राष्ट्रीयकरण हो गया। इंसान चांद तक पहुंच गया तो कौनसी बड़ी बात है। बात जब बनेगी जब इंसान परमात्मा तक पहुंचेगा। इससे पहले कोई बात नहीं बनेगी। गीता में आता है कि रात में कोई मरे, धूमिल समय में मरे, सोता-सोता मरे चारपाई पर, तो वह इंसान चन्द्रलोक में फेंक दिया जाता है, वहां थोड़ा इधर उधर भटक कर फिर वापस इस दुनिया में आ जाता है। तो इंसान कई बार चन्द्रलोक में हो आया, वहां से यहां गिरा, उसको पता भी नहीं। यह देखो कि इंसान का Moral character (सदाचार) कितनी बार ऊंचा बना और वह चन्द्रलोक से भी ऊंचा गया। वह भी हमारा ध्येय नहीं। हमारा ध्येय है -

लौटे न जिसमें पहुंचे वही मेरा धाम है।

न चन्द्रलोक में जाना है न सूर्य लोक में। उस धाम में पहुंचना है जहां जाकर आना-जाना न रहे, आवागमन से इंसान छूट जाए, आत्मा परमात्मा में मिल जाए। परमात्मा परमधाम है, और उस परमधाम को पाना है। और उसको पाने के लिये सिवाय गुरू कृपा के, गुरू के आशीर्वाद के और कोई साधन नहीं। भगवान करे सन्तजी महाराज का और बड़े गुरू जी का आपको आशीर्वाद प्राप्त हो और हम सब अपने शरीर के बंधनों से छूटकर आत्मा से परमात्मा को पहचानें और हमीं न पहचानें बल्कि अपने सच्चे भाइयों को उस सच्चे चांद का दर्शन करा दें जो परमात्मा ही का मुख है। यह बाहर विज्ञान की बातों में जितना ज्ञान बढ़ेगा उतना ही भोग-विलास बढ़ते जाएंगे और जितना यह गुरूओं के सत्संगों के, आश्रमों के सेवा साधनों के विकास होंगे उतना दुनिया में आत्मा परमात्मा की तरफ खिंचता चला जाएगा। आत्मा और परमात्मा को जोड़ने वाले यह गुरूदेव लोग हैं। इनको मैं नमस्कार करता हूं, और अपको भी नमस्कार करता हूं।

हजूर महाराज के वचन

अभी पण्डित जी महाराज ने बड़ी सरल जबान में आपके सामने गीता और वेदों के सार को खोल के पेश किया है। वह सबके अन्तर है, हमारी आत्मा उसी की अंश है, परमात्मा का रूप है। आत्मा ही परमात्मा का अनुभव कर सकती है, आत्मा जब तक अपने आपको न जान ले, तब तक परमात्मा को नहीं जान सकती। जब तक आत्म तत्ववेत्ता न मिले आत्मा को नहीं जाना जा सकता। यह Radiation से होता है, खुशबू

से होता है। खुशबू बेचने वाले के पास आप जाओगे तो अगर वह कुछ भी न दे तो खुशबू तो मुफ्त मिल जायेगी। अगर एक शीशी भी साथ दे दे तो क्या कहने। आप देखेंगे हर एक इन्सान में Radiation होती है। एक तरफ तवज्जो जहां टिकाओ वहां Radiation से टिकाव मिलता है। इसका सबसे बड़ा इलाज क्या है, प्रभु के पाने का ? जिन्होंने पाया उनकी सोहबत, उनकी संगति। मौलाना रूम साहब ने फरमाया है -

गुफ्त पैगम्बर के हक फरमूदा अस्त। मन न गुंजम हेच दर बालाओ पस्त।

पैगम्बर साहब ने यह फरमाया है, कि खुदा का यह हुक्म है, फरमान है, कि मैं इतना बड़ा हूं, कि न तो ऊंचाइयों में, न निचाइयों में, मैं कहीं भी नहीं समा सकता हूं।

दर ज़मीनो आसमानो अर्श नीज़। मन न गुंजम गो यकींदां ए अज़ीज़।

कि ज़मीनों और आसमानों में कोई जगह मेरे समाने के लायक नहीं है।

दर दिले मोमिन बिगुंजम ईं अजब। गर मरा ख़ाही अज़ां दिलहा तलब।

कहते हैं मगर एक अजीब बात यह है कि एक मोमिन, अर्थात् प्रभु भक्त के हृदय में मैं समा जाता हूं। अगर प्रभु से मिलना चाहते हो तो जिसके अन्तर वह प्रगट है उनकी सोहबत-संगति करो। है वह सब में, वह शहरग से भी नज़दीक है। हमारी आत्मा की आत्मा है। मगर हम उसे देख नहीं रहे। कैसे देख सकते हैं ?

निहां अन्दर निहां बीनश जमालश।

अन्तर में उसकी ज्योति को देख सकते हैं। इसी शरीर के हरिमन्दिर में। यह सच्ची मस्जिद है, यही सच्चा मन्दिर है, और देखने वाले बाहर भटक रहे हैं। अगर बाहर से हटे तो अपने आपको जाने। और इसी शरीर रूपी मन्दिर में उसको पा सकते हैं, मगर, ''गुर प्रसादी देख तूं हर मन्दिर तेरे नाल।'' किसी अनुभवी पुरूष की सोहबत में हम उसको पा सकते हैं। ''इह शरीर हरिमन्दिर है जिसमें सच्चे की जोत।'' Body is the Temple of God यह शरीर हरिमन्दिर है जिसमें सच्चे की ज्योति जगमगा रही है। जिन्होंने अन्तर्मुख होकर उसको पाया है उनमें बड़ी भारी ताकत है। उस परमात्मा ने एक बार कहा, ''मैं एक से अनेक हो जाऊं,'' तो करोड़ों खण्ड-ब्रह्मण्ड हस्ती में आ गए। हमारी आत्मा उसकी अंश है, इसमें भी बड़ी भारी ताकत है। अगर वह महान सुरति (परमात्मा) करोड़ों

ब्रह्माण्ड रच सकती है, तो हम एक शहर भी नहीं बना सकते ? सुरतिवन्त बनो । यह (आत्मा) शेर का बच्चा है । मन-इन्द्रियों के घाट में घिरा पड़ा है । अगर यह मन-इन्द्रियों के घाट से ऊपर आकर अपने-आप की सुध पा ले, तब यह अपने घर जा सकता है । नहीं तो फंसा पड़ा है ।

सारी ग्रन्थ-पोथियां यही कहती हैं कि आत्मानुभव के लिये किसी ऐसे पुरूष के पास जाओ जिसने उस अनुभव को पाया है । अगर आपने इल्म सीखना है तो आप आलिमों (विद्वानों) के पास जाओ । डाक्टरी सीखनी है तो डाक्टरों के पास जाओ, जिन्होंने जिस्म की चीर-फाड़ करके देखा है, और उसकी Demonstration दे सकते हैं । अगर आत्मानुभव को पाना है, तो उनके पास जाओ जिन्होंने अनुभव को पाया है । यह Self analysis (जड़-चेतन की ग्रन्थी खोलने) का एक Practical (करके देखने-दिखाने का) मज़मून है, जिसकी Demonstration (साक्षात्कार) अनुभवी पुरूष पहले दिन सामने बैठाकर करा देता है । वहां से परमार्थ की क, ख, शुरू होती है । यह चीज़ तुम्हारे अन्तर में है । सिर्फ देखने का सवाल है ।

एका संगत इकत गृह बसते, मिल बात न करते भाई ।

एक ही संगत में आत्मा और परमात्मा, दो भाई रह रहे हैं, मगर अफसोस यह (आत्मा) बाहर भटक रहा है ? बाहर से हटे तो उसको पा ले । जब तक इसको अपने आपकी होश नहीं आती, उसका (प्रभु का) अनुभव नहीं हो सकता क्योंकि ''न वह मन से जाना जा सकता है, न बुद्धि से, न प्राणों से । उसका अनुभव करना है तो केवल आत्मा ने करना है ।'' इसलिये कहा - ''कीमते हर कालह मीदानी के चीस्त । कीमते खुद रा न दानी इबल हीस्त ।'' कि ऐ इन्सान ! तूने बहुत कुछ जान लिया पर अपने आपके मुतल्लिक कुछ नहीं जाना तो तू बेवकूफ है । मानुष जन्म पाकर हमारे सामने यही सवाल है कि God first and world next. (प्रथम प्रभु प्राप्ति, बाद में दुनिया) । लेना-देना खुशी से निभाओ । अपने घर की राह लो । मानुष जन्म ही में तुम यह काम कर सकते हो, और किसी जन्म में नहीं । मनुष्य जन्म बड़े भागों से मिला है । एक ही उपाय है, जिन्होंने पाया है उनकी सोहबत (संगति) करो । वह आपको इसकी कुछ पूंजी देंगे । ''सन्तन मोको पूंजी सींपी ।'' पुराने ज़माने में बच्चे को द्विज या दोजन्मा बनाते थे । गायत्री मंत्र देते थे । साथ में अनुभव भी देते थे, ज्योति का । गायत्री मंत्र आजकल भी देते हैं, पर अनुभव नहीं देते । यही फर्क है ।

कोई नई चीज नहीं। मस्जिद में जाओ, वहां भी ज्योति जगाते हैं, मंदिर में जाओ वहां भी ज्योति जगाते हैं। मन्दिर में घण्टा बजाते हैं, गिरजे में भी घण्टा बजाते हैं। यह उस नाद या श्रुति का, कलामे कदीम का, Word या शब्द का इशारा है, जो घट-घट में गूंज रहा है, प्रभु की ज्योति का जो हरेक में जगमगा रही है। ज्योति और श्रुति, Light and Sound Principle कुदरती रास्ता है वापस निज घर जाने का। इसलिये कहा -

हैफ़ दरबन्दे जिस्म दर मानी। निश्नवी आं सौते पाके रहमानी।

कि अफ़सोस तू जिस्म के बंधन में बंध रहा है। उस मालिक की पाक आवाज़ को जो तेरे अन्तर में हो रही है, तू सुन नहीं रहा। Light and Sound is the way back to Absolute God. वह प्रभु न ज्योति है, न श्रुति, न नाम है, न शब्द। जब वह होने में (अस्तित्व में) आया, एक से अनेक हुआ, तो Vibration (हिलोर) हुई। उससे दो सूरतें बनीं, एक ज्योति एक आवाज। तो ज्योति और श्रुति परमात्मा इज़हार में आई ताकत (व्यक्त प्रभु-सत्ता) के दो स्वरूप हैं। इनसे लगकर कहां पहुंचोंगे ? जहां से वह आ रही हैं - अनाम में। अनुभवी महापुरूष का काम है तुम्हें उसका Contact देना, ज्योति और श्रुति से जोड़ देना। वह तुम्हारे अन्तर में है। इसलिये सारे महापुरूषों ने कहा, अन्तर को खोजो। Emerson (एमरसन) कहता है, 'Tap inside.' अन्तर को खोजो। बुल्लेशाह साहब फरमाते हैं।

राह खोजेया अपने अन्दर दा, तां पाया भेद कलंदर दा।

जब तक हम अन्तर्मुख नहीं होते, चीज़ हमारे अन्तर में है, मगर हम उनको पा नहीं सकते। हम बाहर भटकते रह जाते हैं। जिसने देखा है वही दिखा सकता है। Son knows the Father and others whom the son reveals. अर्थात् पिता को उसका बच्चा देखता है, दूसरे वह लोग जिनको वह (उसका बेटा) दिखलाए। ऐसे पुरूषों की सोहबत-संगति का नाम ही सत्संग है। महापुरूष जब आते हैं तो क्या कहते हैं ? महापुरूष हमेशा आते रहते हैं, यहां भटकती रूहों को फिर अपने घर जाने का रास्ता दिखाने।

जिन तुम भेजे तिन्ही बुलाये, सुख सहज सेती घर आओ।

चलो भाई अपने घर। तो यह काम सारे महापुरूषों का रहा है। महापुरूष आते रहे।

गुरू अर्जन साहब ने जितने महापुरूषों की वाणी मिल सकी, इकट्ठी कर दी। एक चीज परम्परा से चली आयी है। हम भूलते रहते हैं, महापुरूष आकर इसे ताजा करते रहते हैं। तो हमारे हजूर ऐसी हस्ती थी जिन्होंने एक तजवीज़ की थी, जो अमली तौर पर उनके वक्त में भी थी और मरते वक्त खास ताकीद की थी, ऐसी Common Ground रखो जिसमें सब महापुरूष, सब समाजों के भाई इकट्ठे हों। उसका नाम तवजीज किया था रूहानी सत्संग या रूहानी कालेज। शरीयत (समाज परम्पर) अपनी-अपनी रहे, नाम, बाहिरी रस्म अपनी-अपनी रहे। पहला कदम है (किसी समाज में प्रवेश पाना) वह ठीक है। दूसरा कदम, अपने आपको जाने, प्रभु को पहचाने।

हमारी बड़ी खुशकिस्मती है कि मुख़तलिफ़ मज़हबों के जागृत यहां इकट्ठे हैं। पण्डित दीनानाथ दिनेशजी ने गीता से निर्णय किया, वेदों-शास्त्रों के ज्ञाता (श्री राघवाचार्य जी) भी यहां मौजूद हैं। पीर ज़ामिन निज़ामी साहब जिन्होंने फकीरों से पाया है, एक Common ground पर मिलें। भाई सबका रोना तो एक है। हमें मानव देह मिली है। यह काम इसी में हम कर सकते हैं। तो क्या करो ? मीरा बाई शहजादी थी, गई रविदास के पास जो चमड़े का काम करते थे। वैसे तो हम सब चमार हैं, जो चमड़े में फंसे हुए हैं वह सब चमार ही तो हैं। अनुभव को पाना है तो अनुभवी पुरूषों की सोहबत करो। जागते पुरूषों के पास अगर बैठोगे तो तुम भी जाग जाओगे, वह जगा देंगे। जिसकी आंख खुली है, वह तुम्हारी आंख खोल देगा। ''सत्‌गुरू मिले तां अख्खी वेखे।'' किसी समाज में रहो, किसी जागते पुरूष के पास बैठो। मानुष जन्म का फायदा उठाओ। अब हमारी और भी खुशकिस्मती है कि हमारे पीर ज़ामिन निज़ामी साहब यहां तशरीफ लाए हैं। अपने कीमती विचार आपके सामने रखेंगे।

पीर निज़ामी साहब का भाषण

पीर ज़ामिन निज़ामी साहब ने कहा, ''आज सावनसिंह जी महाराज का जन्मदिन है। सावन का महीना क्यों अच्छा समझा जाता है ? इससे खुदा की रहमत (दया-मिहर) बरतसी है, बारिश के कतरो की शकल में। उससे दुनिया को जो लाभ पहुंचता है, उसे बयान करने के लिये किताबों की किताबें लिखी जाएं तो भी बयान नहीं कर सकते। इसी सावन के महीने में उनका जन्म हुआ था और उन्होंने रूहानियत की वह झड़ी लगाई कि जलथल एक कर दिए।''

पीर साहब ने अभी हाल की एक मिसाल देते हुए कहा, ''आप लोगों ने अख़बारों में

हाजी महबूब अली के 107 वर्ष की उम्र में इन्तकाल (मृत्यु) की ख़बर पढ़ी होगी। दिल्ली के पंजाबियों में वह लखपति व्यापारी थे। परमार्थ की लगन लगी तो लाखों की जायदाद, सम्पत्ति, छोड़कर हजरत निजामुद्दीन औलिया की बारगाह में एक छोटे से मकबरे में, जहां कई कब्रें थीं, और रहने के लिये इतनी जगह थी जहां एक आदमी लेट सके, वहां 50 साल अपनी जिन्दगी गुज़ारी। बुध के दिन दरगाह में चिराग जलाने की खिदमत उन्होंने अपने जिम्मे ले रखी थी क्योंकि हज़रत निज़ामुद्दीन औलिया का जन्म बुध को हुआ, उसी दिन उनकी मृत्यु हुई, और बुध को ही वे बाबा फरीद साहब के मुरीद (दीक्षित) हुए। तो हाजी महबूब अली की मृत्यु भी बुध ही के दिन हुई, हालांकि मंगल को उनके बचने की कोई उम्मीद न थी। मगर खुदा को उस निसबत को कायम रखना था जो उन्हें बुध के दिन से थी। यह मिसाल मैंने इसलिये दी कि हजूर महाराज, जिनका नाम सावनसिंह था, उनकी पैदायश सावन के महीने में हुई और सावन के महीने की खसूसियत (विशेषता) है, अल्लाह की रहमत का बरसना और उस रहमत से ख़ल्के खुदा (सृष्टि) का फायदा उठाना। चुनांचे उन्होंने (हजूर ने) भी रूहानियत की झड़ी लगा दी जिसका नतीजा यह हुआ कि हिन्दुस्तान के गोशे-गोशे में उनके शैदाई (प्रेमी) और फिदाई (उन पर सर्वस्व न्यौछावर करने वाले) और उनसे फैज़ (परमार्थ लाभ) पाने वाले पैदा हुए जिनमें एक कतरा यह (महाराज कृपालसिंह) भी हैं जो आपके सामने बैठे हैं, लेकिन आपको मालूम है, ''कतरा कतरा दरिया मी शवद'' कतरा कतरा जमा होकर दरिया बन जाता है। तो हमारे सन्त जी भी गुणों के कतरे जमा होकर दरिया ही नहीं समुन्दर के मुकाबिल हैं, जिसकी गहराई का कोई ठिकाना नहीं है।

मैंने अभी थोड़े दिन हुए जो National integration exhibition यानी कौमी एकता की नुमायश हुई उसमें सन्तजी का बनाया एक षष्ट पहलू मकान देखा जिसमें एक पहलू में गुरू नानक साहब का ग्रन्थ शरीफ़, एक पहलू में कुरान शरीफ़, इस तरह 6 बड़े मज़हबों की किताबे और निशान हर रूख में मौजूद थे। यह तो सब कुछ था, लेकिन जब तक अमली मैदान में आकर न देखा जाए तब तक पता नहीं चलता किसी शख्स में कितनी गहराई है। तो अभी निज़ामुद्दीन में सिकंदरी मस्जिद को तोड़ने का जो किस्सा हुआ तो हज़रत सन्त कृपालसिंह जी के जौहर खुले। एक इंसान जो हर मज़हब का एहतराम करता है, सबका दर्द अपने दिल में रखता है, उसको किसी मज़हब का इंसान हो, उसके दुख और तकलीफ़ को देखकर बेचैन हो जाना चाहिये। तब वह कामिल इंसान कहलाने का हकदार है। और हमने देखा कि सन्त जी महाराज और मुनि सुशील कुमार जी, यह

दोनों गवरनर से मिले, इन्दिरा गांधी जी से और दूसरे लीडरों से मिले और ज़ोर दिया कि मस्जिद बननी चाहिये। तो मैंने कहा कि इंसान का बाहर कुछ होता है, अन्दर कुछ होता है। मगर मैंने सन्त जी महाराज का अन्दर और बाहर एक पाया है। जब तक इंसान अखलाकी (नैतिक) बुलन्दी पर न पहुंच जाए यह बात पैदा नहीं होती।

यहां चर्चा चला रूहानियत का, आत्मा का परमात्मा से मिलने का, वासिल होने का। यह जबान पर लाने की बात नहीं। यह चीजें काल से नहीं, हाल से ताल्लुक रखती हैं। मौलाना रूम फरमाते हैं, ''कालरा गुलज़ार मरदे हाल शौ, पेशे मरदे कामिले पामाल शौ।'' कि ऐ इंसान तू मरदे हाल बन जा। और क्या कर ? ''पेशे मरदे कामिले पामाल शौ।'' किसी मरदे कामिल (पूर्ण पुरूष) के पावं की धूल बन जा। रूह के मुतल्लिक हज़रत मोहम्मद साहब से लोगों ने पूछा तो फरमाया, ''वल रूह मिन अम्रेरब्बी।'' उन पर वही (आकाशवाणी) उतरी कि ऐ मुहम्मद ! इनसे कह दो कि यह अम्रे रब्बी है, अल्लाह का हुक्म है। बस। इंसान में इतनी अक्ल नहीं कि उसको समझ सके। किस तरह रूह इस जिस्म में काम करती है, उसको देख नहीं सकते, न समझ सकते हैं। दुनिया की मिसाल ले लो। लोहे के दो टुकड़े हैं। एक में मिकनातीसी ताकत है। वह दूसरे लोहे के टुकड़े को खींचती है। लेकिन दूसरा उसी शकल का लोहा नहीं खेंचता। और वह खेंचने वाली ताकत दिखाई तो नहीं देती। जो भी महापुरूषों ने किताबों में बयान किया है, वह सही है, सत्य है। लेकिन हमें उस वक्त तक समझ नहीं आ सकता जब तक हमारे आंख, कान, नाक, Trained न हो जाएं, उसे समझने के लिये। इसलिये कहा —

आंख नाम कान मुंह ढांप कर नाम निरंजन ले।
भीतर के पट तब खुलें जो बाहर के पट दे।

जब तक यह हवासे ख़मसा (इन्द्रियां) और यह तमाम ख़ाहिशाते नफ़सानी (इच्छायें) जो हैं इन पर काबू नहीं होगा हमारा, तब तक अन्तर के पट नहीं खुलेंगे। यह मज़ाक नहीं है, बड़ा कठिन मरहला है। यह चीज़, यानी इंसानियत और रूहानियत, महापुरूषों की सोहबत-संगत में हासिल होती है। मौलाना रूम फ़रमाते हैं, ''हरेक ख्वाहद हमनशीनी बाखुदा। ओ नशीनद दर हजूरे औलिया।'' कि जो खुदा की नज़दीकी हासिल करना चाहता है, वह खुदा रसीदा (प्रभु प्राप्त) लोगों की सोहबत में बैठे। ''चूं शवी दूर अज़ हजूरे औलिया। दर हकीकत ओ शवी दूर अज़ खुदा।'' कि अगर तू औलिया से, प्रभु प्राप्त महापुरूष से दूर हो गया तो तू खुदा से दूर हो गया। आज आप लोगों को, जो

सावन आश्रम में जमा हैं, रूहानियत के मरकज़ (केन्द्र) पर, हजूर सावनसिंह जी महाराज की उन बरखाओं से जो यहां बरस रही हैं, कल से, आज से, और लगातार आप लोग उससे फायदा उठा रहे हैं मैं बधाई देता हूं। सन्त कृपालसिंह जी महाराज को भी मैं बधाई देता हूं कि उनको ऐसे मुर्शिदे कामिल (पूर्ण गुरू) मिले जिन्होंने उन्हें कतरे से समुन्दर बना दिया और आज यह आलम (अवस्था) है कि हर कोई इनसे हर तरह का दीन का, दुनिया का, अन्न का, पानी का, रोटी का, रूहानियत का फैज़ पा रहा है। खुदा करे इनका लंगर जारी रहे और यह फैज़ (परमार्थ लाभ) उनका हमेशा जारी रहे। आमीन !

हजूर महाराज का सत्संग प्रवचन

हजूर महाराज ने कहा, ''अभी आपके सामने दरगाह ख्वाजा निज़ामुद्दीन औलिया के पीर ज़ामिन निज़ामी साहबन ने राज (भेद) की बात पेश की कि आत्मा परमात्मा का जानना लफ्ज़ों में नहीं हो सकता। उसको कब जाने, जब यह जिस्म-जिस्मानियत से आज़ाद हो। कुरान शरीफ में आता है, जिसने नफ़स को (कामनाओं) काबू कर लिया, वह प्रभु को जान गया। यह एक Practical (करनी का) मज़मून है। जिन्होंने इस काम को किया, करके उसमें कामयाब हुए हैं, उनकी सोहबत-संगति से इधर की समझ आने लगती है। दो किस्म के इल्म हैं। एक हाल एक काल शम्स तबरेज़ जब मौलाना रूम से मिलने गए तो वह (मौलाना रूम) स्कूल में पढ़ा रहे थे। यह लोग ढूंढ लेते हैं जिसने आगे काम करना होता है। तो पूछा (शम्स तबरेज़ ने) ''ईं चीस्त ?'' कि यह क्या कर रहे हो ? तो कहने लगे, ''ईं काल अस्त नमी फ़हमी।'' कि यह काल का इल्म है जिसके बारे में तुमको मालूम नहीं यह क्या है। लड़कों को छुट्टी हुई। सब चले गए, यह (शम्स तबरेज़) बैठे रहे। इन्होंने क्या किया, जो तख्ती कलम दवातें या किताबें थी सब पानी के चौबच्चे (हौज) में डाल दीं। जब लड़के वापस आए, न किताबें, न तख्तियां, न कलमें, न सलेटें। एक-एक से पूछने लगे, क्या हुआ, किधर गई सारी चीजें। अब शम्स तबरेज़ चौबच्चे से चीजें निकालते जाएं, किताबें, सलेटें, सब सूखी। मौलाना रूम यह देखकर कहने लगे, ''ई चीस्त ?'' कि यह क्या है ? तो कहने लगे, ''ईं हाल अस्त नमी फ़हमी।'' कि यह हाल का इल्म है जिसके बारे में तुम्हें मालूम नहीं।

तो सन्तों का अनुभवी पुरूषों का इल्म और है। बाहर के इल्म से उसको समझने का, थियौरी को समझने का यत्न हो सकता है, पर समझ आती है सत्संग में, अनुभवी पुरूषों

की सोहबत-संगति में। सत्संग वह जगह है जहां महात्माओं की सोहबत में कुछ समझ आने लगती है। और वह रंग चढ़ता है। जैसी सोहबत वैसा रंग। डॉक्टरों की सोहबत करो, कुछ समझ आने लगेगी डॉक्टरों की। कुछ नुसख़े तुमको याद हो जाएंगे, पर डॉक्टर नहीं बनोगे जब तक Anatomy करके, जिस्म की चीर-फाड़ करके, तुम खुद उसकी Demonstration नहीं दे सकते। तो अनुभवी पुरूषों की वाणी पेश करने का मतलब ऐसी Common ground (सांझी धरती) बनाना है ताकि यह मालूम हो कि एक इल्म हाल का है जिसका आम दुनिया को पता नहीं। वह इल्म क्या है ? यह इन्द्रियां जिनका रूख इस वक्त बाहर की तरफ, यह कैसे उलट सकती हैं, अन्तर्मुख हो सकती हैं ? यह एक Practical मज़मून (करनी का विषय) है। श्री गुरू अमरदास साहब ने इस सिलसिले में फरमाया -

सत्गुरू मिले उलटी भई भाई, कहना कछु न जाए।

यह इन्द्रियां उलटती है, Invert होती है, सत्गुरू के मिलने से। यह कैसे होता है ? यह देखने का मज़मून है, कहने का मज़मून नहीं। अनुभवी पुरूष बैठाकर इसका अनुभव देता है। खुद देखता है इंसान। इसीलिये कहा, ''जब लग न देखूं अपनी नैनी, तब लग न पतीजूं गुर की बैनी।'' तो मैं कह रहा था, उनके कलामों को, उनकी याद में बैठकर, उन्होंने क्या कहा, क्या नहीं कहा, आखिर में कहा तुम उस प्रभु को पाओ। हमारी रूह अम्रे-रब्बी है। रूह ने उसको पाना है। इसको (रूह को) जानो। उसके (प्रभु के) साथ जोड़ो। ''कोई जन हरि सों देवे जोड़।'' जो आप ही नहीं जुड़ा तुमको कैसे जोड़ सकता है ? तो मेरे अर्ज करने का मतलब है कि इकट्ठे होकर महापुरूषों का जन्मदिन मनाने से यह सबक ताज़ा होता है। कैसे उन्होंने पाया, क्या कुछ किया - इससे कुछ शौक बनता है। पहलवानों की सोहबत में बैठकर पहलवानी का शौक बढ़ता है। A strong man revels in his strength and a weaker man worders how he get it ? एक मजबूत आदमी अपनी ताकत में सरशार है और कमजोर आदमी देखकर कहता है, अरे भई यह कैसे बन गया। अरे भई वह एक दिन में नहीं बना। मेरे अर्ज़ करने का मतलब है, अगर हमने अनुभव को पाना है तो अनुभवी पुरूषों की सोहबत ही में पा सकते हैं। सत्संग नाम ही ऐसे पुरूषों की सोहबत का है। आलिमों (विद्वानों) की सोहबत का नाम सत्संग नहीं। ग्रन्थाकारों की सोहबत का नाम सत्संग नहीं। सत्संग ऐसी हस्ती सोहबत का नाम है, जिसने सत् का अनुभव कर लिया है। उसकी Radiation से (अध्यात्मक की किरणें

जो उससे प्रसारित होती हैं, उनसे) तुम्हें टिकाव मिलता है, मन स्थिर होता है।

सुरति साध संग ठहराई, तो मन थिरता बुध पाई।

वहां Radiation होती है आत्म रंग की। खुश्बू बेचने वाले गंधी के पास बैठो, वह तुम्हें कुछ भी न दे तो खुश्बू तो मुफ्त में मिलती है तुम्हें। अगर वह साथ में इतर की शीशी भी दे दे तो क्या कहने ! यह एक दिन का काम नहीं, हाल का इल्म सीखना। वक्त लगता है। बाहर के इल्म को पढ़ना है तो स्कूल में जाओ, आलिमों (विद्वानों) के पास जाओ। अगर अनुभव को, आत्मानुभव को पाना है तो अनुभवी पुरूषों के चरणों में बैठो। वहां तुमको समझ आने लगे कि अनुभव क्या है ? अभी समझा नहीं है। अभी सिर्फ ग्रन्थ पोथियों में उसको ढूंढ रहे हैं। हम आत्मा हैं। देहधारी हैं। मन-इन्द्रियां हमसे ही ताकत लेती हैं, यह ग्रन्थ-पोथियां कह रही हैं। क्या सचमुच Self-Analysis करके, जड़ से चेतन (आत्मा) को अलग करके हमने अपने-आपको जाना है ? क्या सचमुच इन्द्रियां हमारे कंट्रोल में, काबू में हैं, कि जिस इन्द्री से जब चाहें काम लें, जिससे चाहें न लें ? अपने आपको जानना तभी होगा ना ! हम इस मशीनरी को चलाने वाले हैं। जैसे पावरहौस में पटे लगे होते हैं जिससे फैक्ट्री चलती है। जिस डिपार्टमेन्ट (खाते) का पटा बन्द कर दो उसकी मशीनरी बन्द हो जाती है। अगर Main (बड़ा) पटा बन्द कर दो तो सारा कारखाना बन्द। यह जिस्म की मशीनरी है, जिसमे चलाने वाले हम (आत्मा) हैं। हम इस जिस्म में रह रहे हैं उसके (प्रभु के) हुक्म से। यह मशीनरी जिस्म की मिली है कि इससे हम काम लें। बुद्धि हमारे इशारे पर चले, मन बुद्धि के इशारे पर, और इन्द्रियां मन के इशारे पर चलें। यहां उलटा काम बना पड़ा है। भोग इन्द्रियों को खेंच रहे हैं, इन्द्रियां मन पर सवार हैं, मन बुद्धि पर सवार है। अनुभवी पुरुष, जिन्होंने अनुभव को पाया है, उनकी सोहबत में बैठकर समझ आने लगती है कि अनुभव क्या चीज़ है। इल्म (विद्या) आलम (अनुभवी पुरूष) के गले में फूलों का हार है। अनुभवी पुरूष अगर आलम (विद्वान) भी हो तो वह एक चीज़ को कई तरीकों से पेश करेगा, न भी हो तो बात पते की कहेगा। बुल्लेशाह साहब साईं इनायत शाह के पास गए तो पूछा, परमात्मा कैसे मिलता है ? तो कहने लगे -

साईं दा की पावनां, इधरों पटना ते ओधर लावनां।

इधर से (बाहर दुनिया से) हटाना और उधर (प्रभु की ओर) लगाना। यह एक

Practical (करनी का) मज़मून है। कौन लगाएगा (वृत्ति प्रभु की ओर) ? जिसमें उसकी (प्रभु की) शान काम कर रही है। उसमें यह सामर्थ्य है, ताकत है, कि वह अपनी तवज्जो के उभार से तुम्हारी फैली हुई सुरति को इन्द्रियों के घाट से ऊपर ले आएगा, तुम देखोगे कि तुम देह नहीं, देह को चलाने वाले (आत्मा) हो। रूहानियत का यह मज़मून अनुभव का, देखने का मज़मून है। Parallel study of religions (निष्पक्ष भाव से सब धर्म ग्रन्थों के समान विचारों के अध्ययन) से थोड़ी समझ आती है कि सब महापुरूष एक ही बात कह रहे हैं। मगर जब तक वह तजुरबा हमारा जिन्दगी का तजुरबा न बने, हमें यकीन ही नहीं आता, न ही ठीक माने समझ में आते हैं। अब यह बात लो कि इन्द्रियां उलटती हैं, Invert होती हैं। बाहर से अन्तर्मुख होती हैं। यह कैसे होती हैं ? कैसे बयान करें ? अनुभवी पुरूष कहता है, बैठो, देखो। यह अनुभव की चीज है, किसी अनुभवी पुरूष के चरणों में बैठकर देखो। आखिर इंसान-इंसान सब एक हैं। सबके अन्तर परमात्मा ने यह सामान रखा है। हम उस Controlling Power (परमात्मा) के आधार पर इस जिस्म में कायम हैं, जब तक मानव जन्म में वह हमें रखे। और यह काम (अपने आपको जानना और प्रभु का पाना) हम इसी (मानव) योनी में कर सकते हैं, और किसी योनी में नहीं। उसके लिये किसी अनुभवी पुरूष के चरणों में जाना होगा जिसने उस अनुभव को पाया है और हमें दे सकता है। ऐसे अनुभवी पुरूष हमारे हजूर (बाबा सावनसिंह जी महाराज) थे। उन्होंने उस अनुभव को पाया। जो उनसे मिले वह उनकी तवज्जो के उभार से अनुभव को पाते रहे। उनकी तवज्जो और आम लोगों की तवज्जो में बड़ा भारी फर्क है। इसलिय कहा -

यक निगाहे जां फज़ायश बस बवद दरकारे मा।

(अर्थात् जान को उभारने वाली तेरी तक नज़र मेरे लिये काफी है। मुझे और कुछ नहीं चाहिये)। उससे (सन्तों की दयादृष्टि से) आत्मा को उभार मिलता है। आलिमों (विद्वानों) से बुद्धि को उभार मिलता है। हमें दोनों चीजें मिल जाएं तो क्या कहना ! श्री रामकृष्ण परमहंस के पास एक साहब परमार्थ के लिये गए। उससे कहने लगे (परमहंस) भाई एक बात से समझना हो तो मेरे पास आओ। बहुत बातों से समझना हो तो जाओ विवेकानन्द के पास। मेरे कहने का मतलब है, जैसे मैंने अभी अर्ज़ किया, कि अगर तुम पाना चाहते हो, इस राज़ (भेद) को समझना चाहते हो, तो बड़ा गुप्त है, तो किसी अनुभवी पुरूष के चरणों में बैठो, जिसने पाया है। आलिमों-फाजलों, ग्रन्थाकारों से यह

काम नहीं होगा। उनकी संगति में थोड़ी-थोड़ी समझ आने लग जाएगी, फलाने ने यह कहा, फलाने ने यह कहा। मगर इस बात का अनुभव तब जागेगा जब किसी अनुभवी पुरूष की तवज्जो से तुम इन्द्रियों के घाट से ऊपर आकर अपने आपको जानोगे।

आज जिस महापुरूष की याद में हम बैठे हैं, उन्होंने इस अनुभव को पाया। उनकी सोहबत में, सब समाजों के भाई - हिन्दू, मुस्लिम, सिख, ईसाई आते थे। और सब उनकी दयामिहर से शरीर रूपी हरिमन्दिर में आत्म तत्व का दर्शन करते थे। वह कहते थे, सब समाजों में महापुरूष आए और हकीकत की तालीम दी। अपनी-अपनी समाजों में रहो, मुसलमान भाई मुसलमान रहें, हिन्दू-हिन्दू रहें, जिस गरज़ के लिये किसी समाज में तुम दाखिल हुए हो, उस गरज़ को पाओ। उसके लिये नेक-पाक सदाचारी जीवन सबसे जरूरी काम है - ''हर को नाम जप निर्मल कर्म।'' प्रभु से जुड़ो और नेक काम करो। क्राइस्ट से पूछा गया कि प्रभु को पाने का क्या तरीका है ? उन्होंने कहा, Righteousness अर्थात् सदाचार। वह क्या है ? Right thoughts, Right words and Right deeds — शुभ विचार, शुभ वचन और शुभ कर्म। यह है सदाचारी जीवन। 'जैसी सोहबत वैसा रंग।' आप यहां किस लिये इकट्ठे हुए हों ? परमार्थ को समझने के लिये। पाना है तो उससे पाओ जिसने पाया है। थोड़ी तवज्जो आएगी, Radiation से थोड़ी खुश्बू मिल जाएगी। थोड़ी समझ आने लगेगी महात्माओं ने क्या कुछ कहा है। वह क्या है ? वह देखने से ताल्लुक रखता है।

जब लग न देखूं अपनी नैनी। तब लग न पतीजूं गुर की बैनी।

जो भी इसमें (परमार्थ में) रसाई (प्रगति) कर गए हैं, वह पीछे आए या अब हैं, या आगे आएंगे, उनकी सोहबत में दिल को इस राज़ (रहस्य) की समझ आने लगेगी। वह एक नज़र (दृष्टि) दे दें तो काफी है। हमारे बुजुर्ग भाइयों ने बहुत कुछ बयान कर दिया है। बात वही है। समझने की चीज़ है। सोहबत के तुफैल (प्रताप से) समझ कुछ आएगी, कुछ कल आएगी, कुछ परसों आएगी। समझ से यह परे की चीज़ है। अनुभव की चीज़ है। उसके लिये यकीन (विश्वास) की बुनियाद होनी चाहिये। जैसे एक डॉक्टर किसी मरीज से कह दे, बड़ा खतरनाक आप्रेशन है। तेरी जिन्दगी खतरे में है। शायद तू मर जाएगा। तू लिख दे कि मैं जिम्मेदार नहीं। वह (रोगी) क्या करता है ? अपनी अज़ीज़ (प्रिय) जान लिखकर दे देता है कि डॉक्टर साहब ! मैं तेरे हवाले हूं। उसे डॉक्टर की समर्थ पर विश्वास है। जब तक अनुभवी पुरूष के सब कुछ हवाले नहीं करते, काम नहीं

बनता। अभी आपको मिसाल दी पीर साहब ने उस बुजुर्ग हस्ती की जिन्होंने एक सौ सात साल के बाद चोला छोड़ा। उन्होंने सब कुछ दिया, हवाले ही नहीं किया। वही है जिसको उन्होंने पाया। उसी की वह बाहर ज्योति जलाते रहे और अन्तर से भी जग गए। यह कायदे की बात है।

तो भाइयो ! प्रभु का पाना है तो उसके लिये, जिसने पाया है उसकी सोहबत करो। वह जो कहे सो करो। Be good, Do good, Be one. नेक बनो, नेकी करो - किसी के काम आओ - और परमात्मा से प्यार करते हुए, सब में वह है, सबसे प्यार करो। जो महापुरूष आए उन्होंने पाया, जो भी उनके पास आए वह भी पा गए। यह सिलसिला जारी है। जब भी कोई अनुभवी पुरूष आता है, काम बनता रहता है (अर्थात् परमार्थ का अनुभव लोगों को मिलता रहता है)। अरे किसी ऐसी जगह बैठो (जहां से अनुभव मिले आत्म तत्व दर्शन का)। यह अनुभव की चीज है, अनुभवी पुरूषों के पास ही मिलेगी। वह परमात्मा अति सूक्ष्म और अगम है, जब तक हम भी उतने ही सूक्ष्म और अगम न हों उसको देख नहीं सकते।

एवड ऊंचा होवे को, तिस ऊंचे को जाने सो।

इस समय हमारे राघवाचार्य जी आ गए हैं। समय तो बहुत हो चुका है, फिर भी पांच सात मिनट थोड़ा प्रवचन करेंगे।

राघवाचार्य जी के वचन

मंगलाचरण के श्लोक पढ़ने के बाद 113 वर्षीय वयोवृद्ध योगी श्री राघवाचार्य जी ने कहा, ''आज हम जिस महापुरूष, पूर्ण पुरूष, की यादगार में उपस्थित हैं वह सातवीं मंजिल पर बादशाह हैं, जिसका साक्षात्कार करने को हमको मौका मिला। उन्होंने हमको 30 वर्ष के लिये और मृत्यु लोक में ले जाने का आदेश दिया है। उसमें 12 वर्ष 7 मास हो गये हैं, अभी 17 वर्ष 5 मास और बाकी हैं। वह महापुरूष इसलिये मुक्त हो गए हैं, सबको अपने साया में लगाते हैं कि वे ब्रह्म अनुभव में मग्न रहें।

जिस समय सौ वर्ष की हमारी आयु पूरी हुई तो हमको खून के दस्त होने लगे। 50 दस्त एक दिन में हुए, सायंकाल हमको खून की कै हुई, कम से कम 2, 3 सेर खून हमने निकाला और हम बेहोश हो गये। हम क्या देखते हैं, कि एक सुन्दर विमान छतरी के रूप

में घूमता हुआ हमारे पास आया। उसमें चार अपसराएं निकलीं और उन्होंने हमको गोद में लेकर विमान में बैठाया। चलते-चलते सातवां मुकाम जिसको संत सुन्न भी कहते हैं संस्कृत में, सातवीं मंजिल पर पहुंचे तो देखा कि बहुत भारी तख़त है, जैसा कि यहां किला में तख़त रखा है। वह सोने का तख़त था, जिसमें मनी जड़ीं थी और ऐसा रत्न और मोतियों की झालर लगी थी और ऊपर को चन्दौवा लगा हुआ था। उसमें वह महापुरूष बैठे थे जिनकी इतनी लम्बी सफेद दाड़ी थी, सफेद सुनहरे कपड़े थे उनके, (महाराज जी की तरफ इशारा करते हुए) बिल्कुल सफेद ऐसे सुन्दर परदे थे। वहां शांत स्थिर वह बैठे थे। और हमको उन्होंने ले जाकर पेश किया कि हम आचार्य जी को ले आए हैं। उन्होंने कहा, नहीं, अभी 30 वर्ष इनके बाकी हैं। जायें, और हमारा प्रचार करें। और लोगों को इस आश्रम में भेजें जिससे कि वह दिन-रात ब्रह्मानन्द में रहें।

भाई, उनका स्वरूप अति आनंददायक था। अब इनके गुणों को कहना गोया सूरज को दीपक दिखाना है। कुछ इसी प्रकार आप जानें कितने मनुष्य को दशम द्वार भेज करके - नौ द्वारे तो हैं ही, दो आंखें, दो कान, दो नासिका और एक मुख का, एक गुदा का, एक लिंग, 9 द्वार हैं। इन 9 द्वारों में से प्राण निकलते हैं इसलिये आवागमन बना रहता है। दसवें द्वार से यह प्राण छूटें तो फिर उसी लोक को पहुंच जायेगा जहां हमारे स्वामी सावनसिंह जी महाराज राज्य कर रहे हैं, जिसमें ये सब महापुरूष हैं और बे-मुक्त कोई नहीं है। उसका लाभ आप लोग सत्संग से कर सकते हैं।

''शताम् संगा सत्संगा''

सज्जन पुरूषों का जो साथ है वह जैसा हमारे सन्त जी ने कहा है, उनका जो संग है, सज्जन पुरूषों का, उसका नाम सत्संग है, सज्जन किसको कहते हैं ? यह भी ढूंढना चाहिये। प्रिय शब्द, सहनशील, कोई कुछ कहे कोई कुछ कर दे, लेकिन उनको कुछ नहीं। अगर कोई गाली भी दे, उनको कोई मार भी दे, तो भी वह परे रहते हैं। ऐसे पुरूषों का संग सत्संग है। वह शिशु स्वभाव अर्थात् बच्चे के समान सरल स्वभाव वाले होते हैं, सुख-दुख से उपराम। परसों इन्हें (महाराज जी को इशारा करके) बुखार चढ़ा रहा और आप जनता को उपदेश करते रहे। आपने लाखों आदमियों को नाम देकर के उस स्थान को भेजे हैं, जहां पर परम् गुरू उपस्थित है।

एक दिन हम बम्बई जा रहे थे और फर्स्ट-क्लास का रिजर्वेशन था हमारा और

सन्तजी का भी था। तो उसी गाड़ी में दोनों मिल गये और ताई जी भी संग थीं जो कि बड़ी दयालुनी हैं, जिसे हम कुछ कह नहीं सकते। बयान से परे है उनका स्थान, वाणी से परे उनकी सेवा है। जहां भी वह गाड़ी रास्ते में ठहरती गई तो हजारों आदमी उपस्थित हो जाते थे। हमको लेकर सामने खड़ा कर देते थे और कहते थे, कि देखो भाई, यह हमारा भाई है और कहां से आया है। इसी तरह हम लोग बम्बई तक गये और आपने लाखों आदमी, एक को नहीं, उस आश्रम को भेज दिये और करोड़ों आदमी भेजने के लिये तैयार हैं। जिनके यहां यह हिन्दू है, यह मुसलमान है, यह क्रिशचियन है, यह जैनी है, यह अमुक पंथ वाला है, ये इनके यहां नहीं। यह सब धर्मों को समान मानते हुए आपस में जो राग-द्वेष है, उसकी निवृत्ति के लिये, आप सबको बतला रहे हैं। सब धर्म आपस में राग-द्वेष छोड़कर के और एक पारब्रह्म मालिक जो है, उसकी उपासना करें। यही आपका ध्येय है, और इसी ध्येय को लेकर चलते हैं। और हम इस बात का अनुभव करते हैं। इतना ही कहकर हम समाप्त करते हैं।'' इसके बाद दर्शनसिंह ने कविता पाठ किया और दोपहर का सत्संग समाप्त हुआ।

✦ ✧ ✦

भण्डारा समारोह 27 जुलाई शाम की सत्संग सभा

बाबा बेलासिंह, मुनी सुशीलकुमार तथा हजूर महाराज के प्रवचन

27 शाम की सत्संग सभी में हजूर महाराज ने रूहानी सत्संग के वयोवृद्ध प्रचारक बाबा बेलासिंह जी से कहा कि वे कुछ कहें। बाबा बेलासिंह जी ने उठकर कहा, ''वाहेगुरू का ख़ालसा श्री वाहे गुरू जी की फ़तेह।'' इससे ज्यादा मेरे पास और कहने को कुछ भी नहीं। इसलिये मैं आप लोगों से माफ़ी चाहता हूं।'' यह कहकर बाबा बेलासिंह जी बैठ गए। इसके बाद हजूर महाराज जी ने 'वाहेगुरू जी का खालसा श्री वाहेगुरू जी की फ़तेह' की व्याख्या करते हुए यह वचन कहे।

हजूर महाराज के वचन

हजूर महाराज ने फरमाया, ''बाबा बेलासिंह ने बहुत बड़ा उपदेश दिया है कि अगर सारे गुरू के बन जाओ - मैं गुरू का, मैं गुरू का - तो बेड़ा पार हो जाए। अगर कुछ देखा भी है, तो Credit (श्रेय) गुरू को है। क्यों साहब ? हमारी तो प्रार्थना ही है ना उसके आगे, ''हे सत्गुरू ! हम तेरे हैं। हमें उस तरफ चलाओ जहां आप चलाना चाहते हो। अगर कोई काम हम से बन पड़े तो सबसे नीचे रहो। उस काम का Credit आप न लो। अगर हम किसी के हो जाएं तो उसके दिल में हम बस जाएंगे।

मिसाल है, एक थी बेसवा। उसका एक दोस्त जा रहा था। बाज़ार में भीड़-भाड़ बहुत थीं। एक फ़कीर, साई, जो गुरू का हो चुका था, तो भीड़ में उसका कन्धा बेसवा से लग गया। बेसवा के दोस्त को गुस्सा आया। उसने मारा थप्पड़ फ़कीर साईं को। फ़कीर चुप रहा। वह किसी का हो चुका था। वह किसी का था ना ! जब वह (बेसवा और उसका दोस्त) ऊपर मकान में गए तो जिसने फ़कीर को चपेड़ मारी थी, वह कोठे से नीचे गिर गया। वेसवा ने देखा, फ़कीर, साई, को इसने मारा है, इसीलिये यह सिलसिला बना है। आकर माफी मांगने लगी कि भई इससे कसूर हो गया है। तो फ़कीर कहने लगा कि इसमें मेरा क्या है ? दोस्तों-दोस्तों की यह लड़ाई है। तेरे दोस्त को गुस्सा आया, मेरे चपेड़ मार दी। मेरा जो दोस्त था उसने इसे छत से नीचे गिरा दिया। तो भाइयों, आज यह सबक सीखो कि हे सत्गुरू, मैं तेरा।

यह एक शब्द लिखा था, 'मैं गुर का, मैं गुर का' - यह एक पूरा शब्द है, 'मैं हो गया सत्‌गुर का।' गुरू का होना भई बड़ी भारी बात है। लाखों का एक उपदेश है यह, कि अगर तुम उसके हो जाओ, तो वह तेरा है। और वह तेरा हो जाए तो क्या होगा ? ''जे तू मेरा हो रहे सब जग तेरा होए।'' क्यों साहब, उपदेश ऊंचा है कि नहीं ? इसी बात को समझना है। हमसे कोई काम ले तो हम कहते हैं यह मैंने किया। देखो मैं न होता तो यह न होता, वह न होता। अरे भई वह चलाने वाला ही न होता तो हम क्या करते ? तो यह सबसे बड़ा उपदेश है जो इस वक्त दिया है। इस बात की कमी है हमारे जीवन में। हम अभी तक गुरू के बने नहीं। अपने दिल में कंघी मारकर देखो।

दशम गुरू साहब का वाकिया (वृतान्त) है। याद रखो, गुरू हरेक का मान बढ़ाए रखता है। जानते हुए भी कि इसमें (शिष्य में) कमजोरियां हैं, फिर भी कहते हैं, शाबाश ! ताकि इसका दिल बढ़े। तो दशम गुरू साहब ने एक सिख को कहा, वाह भई, तू तो बड़ा लायक (योग्य) है। उसकी घर वाली ने कहा, ''महाराज ! यह आपका दास नहीं, यह मेरा दास है। यह मेरी हर आज्ञा का पालन करता है।'' कहने लगे (गुरू साहब) बहुत अच्छा। उस आदमी से कहा, भई कल एक मल-मल का थान लेते आना। कहने लगा, बहुत अच्छा साहब ! जरूर ले आऊंगा। रात पड़ी तो वह थान खरीद कर घर ले आया। जब बारह-एक बजा, दुकानें सब बन्द हो गईं, घरवाली कहने लगी, यह थान तो मैंने लेना है। बहुतेरा कहा, भली लोक, मान जा। यह लिया है, इसको दे दे। कल तुझे ऐसा ही थान ला दूंगा। एक छोड़ दो ला दूंगा। कहने लगी, ''मैंने तो यही लेना है।'' अब दिन चढ़ा। गए गुरू के पास तो यह भी बगल में थान दबाए पहुंच गई। पूछा, ''क्यों भई थान खरीदा है ?'' कहने लगा, ''कल तो फुरसत नहीं मिली, आज जरूर ले आऊंगा।'' पास घरवाली खड़ी थी। कहने लगी, ''महाराज, यह थान है। बताओ आपका दास है यह कि मेरा ?'' बात समझे हो ? बाबा बेलासिंह का उपदेश बड़ा पुर मतलब (सारगर्भित) है। इसी बात की हम में कमी है कि हम अभी तक गुरू के नहीं बने।

हज़रत इब्राहीम थे। एक दिन बाजार में गए। वहां से एक गुलाम खरीद लाए। उन दिनों गुलाम बिका करते थे। ले आए। उसको बैठाया। कहने लगे, कहां बैठोगे ? कहा, जहां बैठाओगे। मैं तो बय-खरीद हूं। पूछा, क्या खाओगे ? कि जो दे दोगे। खरीदा गया ना। क्या पहनोगे ? जो दोगे। जब मैं खरीदा गया तो मुझे अब अख्त्यार क्या है ? बात समझे ? हज़रत इब्राहीम ने यह सुनकर चीख मारी कि ऐ खुदा, मैं तेरा बन्दा नहीं बना।

क्यों साहब ! अपने दिन में कंघी मारकर देखो। अगर हम गुरू के हैं, फिर हम भजन क्यों न करें, कहना क्यों न मानें ? हरेक काम में दखल, हरेक काम में अपना मन। गुरू का कहना उतना ही मानेंगे जितना हमारा मन माने। इस तरह काम नहीं बनेगा। गुरू के हो जाओ। हे प्रभु ! मैं तेरा हूं। यही सबक पढ़ने वाला है, और यही दिल में धारण करने वाला है। क्या फिर दोहराऊं मैं ? क्यों साहब ! अब बोलो, दिल से बोलोगे या जबान से। किसी के हो जाओ। फिर कोई खतरा नहीं। जिस लड़की की शादी हो जाती है कभी उसको फिक्र होता है मैं कहां से कपड़ा पहनूंगी, कहां से खाना खाऊंगी, कहां रहूंगी ? कभी होता है फिक्र ? क्यों ? वह किसी की हो गई। हम अभी तक गुरू के नहीं बने। गुरू और परमात्मा एक ही चीज है। वह God in man (मानव घट में परमात्मा) होता है।

गुर में आप समोए शब्द वरताया।

हम गुरू के नहीं बने। इस बात की कमी होने करके हमको मुद्दतें गुजर जाती हैं, हम तरक्की नहीं करते। अच्छा हुआ इनको (बाबा बेलासिंह) कविता नहीं मिली। सबसे बड़ी कविता इन्होंने पेश कर दी, जो बड़ी पुरमग्ज़ (सारगर्भित) थी और है भी, कि हे प्रभु ! मैं तेरा, मैं तेरा। है न यह सबक पढ़ने वाला ? स्वामी जी की वाणी में आता है, ''मैं गुर का, मैं गुर का, मैं हो गया गुर का।'' सो भाई, गुरू के बनो। गुरू किसका बना है ? प्रभु का। तो तुम प्रभु के बन गये कि नहीं ? तो भई दिल से कहो, हे सत्‌गुरू ! हे गुरू ! मैं तेरा। वाहेगुरू का ख़ालसा किसको कहा ? खालसे से मुराद (अभिप्राय) निरोल, खालिस, जिसमें कोई मिलावट नहीं, मैं-मैं, तू-तू की If and but (अगर-मगर) की कोई मिलावट नहीं। बे चूं-चूरां गुरू की हर आशा का पालन करना। अपने-अपने दिल पर हाथ रखकर देखो तुम गुरू के हुए के नहीं ? दुनिया हमारी है गुरू कहां हमारा है ? नहीं तो कभी के कुछ बन जाते। यही कमी है जिससे हम अभी तक बहके जा रहे हैं।

तुम एक जहाज़ पर चढ़ जाओ, अगर कहीं गिर जाओ दरिया में, तो मल्लाह (नाविक) तुम्हें डूबने देता है ? हमारे हजूर एक मिसाल दिया करते थे कि तुम स्टेशन पर पहुंचे, ब्यास स्टेशन पर। तांगे पर सवार हुए कि जल्दी जाकर दर्शन करेंगे गुरू के। किराया भी नहीं दिया। रास्ते में कोचवान का जो घोड़ा था, उसका तंग टूट गया। अभी उसे किराया भी नहीं दिया, वह (तांगे वाला) अपनी पगड़ी उतार कर उस पर बांधता है। कहते हैं, तुम्हें उस पर भरोसा है, कि किराया नहीं दिया, वह जरूर तुम्हें पहुंचाएगा। अरे तुम्हें गुरू

पर इतना भी भरोसा नहीं। यह सब उपदेशों का सार उपदेश है। अगर तुम गुरू के बन जाओ, प्रभु के बन जाओ, सब जगत तुम्हारा है। इन्होंने कोई मामूली उपदेश नहीं दिया। इस बात की कमी है। जिस बात की कमी है, उधर नजर नहीं जाती। हम ज्ञानी बनते हैं, ध्यानी बनते हैं, बड़े लैकचरार भी बनते हैं। बड़े कथई, बड़े आलम-फ़ाज़ल (विद्वान) मैंपने में बड़े सरशार (मस्त) भी होते हैं। मगर अभी तक बन नहीं सके।

सुबह हर रोज़ जब मिलो, पता है, यह बोला सिखों में क्या है, जब दो सिख आपस में मिलते हैं ? वाहेगुरू जी की फतेह है, प्रभु मैं तेरा हूं। तुम कहो एक दफ़ा, जो काम है वह तेरी दया से है। Beauty (खूबसूरती) है कि नहीं ? तुम राम-राम भी कहते हो - सारे बोले अच्छे हैं, पर यह बोला कितना अच्छा है मुआफ करना, प्रभु मैं तेरा। फिर मिलें, हे प्रभु मैं तेरा। और बड़ी खुशी से कहते हैं। यह उपदेश सारे उपदेशों का सिर उपदेश है, जिसे हम भूल चुके हैं। आज किसी के हो जाओ तो कोई फिकर नहीं, खाने-पीने की, रहने-सहने की, इन Problems (समस्याओं) की बेफिक्री है, यहां भी है वहां भी। इनका फिक्र क्या ?

नानक कचडेयां संग तोड़ ढूंढ सज्जन संत पक्केयां।
एह जीवन्दे बिछड़ें ओह मोयां न जासी संग छोड़।

जब ऐसा हो गया तो क्या डर है तुमको ? गुरू नानक साहब के पास एक सिख भाई थे। अजित्ता नाम था उनका। यह बात है उसकी। अगर हमारा जीवन ऐसा है - बच्चे का जीवन इसी तरह का है। गुरू नानक साहब ने एक बार कहा अजित्ता से, कि दुनिया में कई किसम के लोग हैं। एक वह लोग हैं जिनको सिखी की कुछ खूशबु आई है। दूसरे वह लोग हैं जो सिखी के साये में, छत्र के नीचे बैठे हैं। तीसरे वह लोग हैं, जिन्होंने सिखी का फल खाया है। तो भगवान ऐसे लोगों को बख्शेगा जिन्होंने सिखी का फल खाया है। बाबा बेलासिंह ने एक बात कही कि मुझे कविता कोई याद नहीं तो मैं क्या सुनाऊं। मगर एक लफ़्ज़ ऐसा कहा जो बड़ा पुरमग़्ज़ (सारगर्भित) था, वह यह कि सिखों में जब दो भाई मिलें तो कहते हैं, ''वाहेगुरू का ख़ालसा, श्री वाहेगुरू जी की फतेह।'' कि हे प्रभु मैं तेरा हूं, और हे वाहेगुरू (प्रभु) तेरी जय हो। तो यही बात मैं कह रहा था कि अभी हम किसी के हुए नहीं। अगर किसी के हो जाएं तो बेड़ा पार है। मज़मून बहुत अच्छा है। बाबा बेलासिंह की मेहरबानी।

मुनि सुशील कुमार जी का भाषण

मुनि सुशील कुमार जी ने कहा, ''प्यारे सन्त जी महाराज, प्यारे भाइयों, माताओं और बहनों ! आपके इस आध्यात्मिक जगत में जाकर मुझे बड़ा आनंद आता है। अभी हमारे भाई कह रहे थे 'वाहेगुरू जी का खालसा, श्री वाहेगुरू की फतेह।' वाहेगुरू जी का खालसा कौन है ? जो सिर पर केस रखे ? कड़ा-कच्छा रखे ? खालसा उसको कहते हैं, जिसने राग-द्वेश को जीत लिया, जिसने मन की वृत्तियों को जीता हो, मन की गांठों को खोला हो। सारे जो नाम के आगे जैन लिखते हैं, क्या वह जैन हैं ? जो सनातन कहते हैं अपने को, क्या उन्होंने सनातन तत्वों को जान लिया है ? बहुत बड़ा नाम रखा है सिख, लेकिन सिख तभी हैं, जब गुरू हमें मान ले, Recognise कर ले। वाहेगुरू जी का खालसा होना बहुत बड़ी बात है। सारे खालसा हो जाए जब तो वाहेगुरू जी की फतेह है ही। लेकिन खालसा वह हो सकता है, जो अपने आपको प्रभु के समर्पित कर दे और खाली रह जाए।

आत्मज्ञान की प्राप्ति के लिये क्या तरीका जैन आचार्यों ने अपनाया है, उसको हम जानना चाहते हैं। यह (सावन आश्रम) एक कामन ग्राऊंड अर्थात् सांझी धरती है। यह सन्तों की जगह है जहां कुछ मिलता ही है, जहां मिलाया जाता है, अलग नहीं किया जाता। यहां सूई का काम है, चाहे छोटा-सा है, कैंची का काम नहीं, जो बहुत बड़ी होती है, पर काटने का काम करती है। मान लो एक मिनट के लिये, अगर हमारे देश में सन्त न होते तो इस देश का हिसाब क्या होता ? कल्पना कीजिए। और सन्तों की जो ताकत थी वह इनकी फिलासफ़ी नहीं, उनका अपना आन्तरिक जीवन था। क्योंकि विचारों से हम एक नहीं हो सकते, व्यवहार से एक नहीं हो सकते, सम्पत्ति से एक नहीं हो सकते। अगर एक हो सकते हैं तो आध्यात्मिक ज्ञान से ही हो सकते हैं। निद्रा किसको कहते हैं ? इन्द्रियों के सो जाने का नाम निद्रा नहीं। और उसमें भी सब इन्द्रियां सोती नहीं। मच्छर काटता है तो हाथ से उसे उड़ाते हैं। हमें मालूम नहीं पड़ता। कौन है वह, जो सोने के बाद भी जागता रहता है, हम सो जाते हैं। यहीं से पता चलता है कि स्थूल है, सूक्ष्म है, इन्द्रिय जगत है, उत्तेन्द्रिय जगत आत्मिक जगत है, मनोमय जगत है, आनंदमय जगत है।

अब जरा और बढ़ जाइये। इन्द्रियां जब सो जाती हैं, मन जागता रहता है। स्वप्न क्या है ? मन ही का खेल है। इन्द्रियां सो जाती हैं तो मन का रास्ता साफ हो जाता है। वह कई तरह के खेल दिखाता है। इन्द्रियों के सोने का नाम है निद्रा, जहां सब भेद मिट

जाते हैं, और मन के सोने का नाम ? समाधि। जिस दिन मन को सुला सकोगे, सुन्न कर सकोगे, संकल्प-विकल्प, विचार और अनेक उपाधि इसमें उठती हैं, उस पर काबू पा सकोगे, उस दिन समाधि को प्राप्त कर सकोगे। मन के बहुमुखी विचारों को एक मुखी बनाओ और एक मुखी विचारों को भी समाप्त कर दो। हमारे जैन धर्म में एक शब्द आता है कि प्रभु ! मुझे आज्ञा दो - वह भगवान ही क्या जो हम से दूर रहे। भक्त का भगवान उसके नज़दीक होता है, अगर उसके मन में भक्ति हो। तो कहते हैं क्या आज्ञा दो ? कि मैं इस शरीर के व्याध को, शरीर की आसक्ति को, ''यह शरीर मेरा है, मैं शरीरवान हूं'' इस इच्छा को छोड़ पाऊं। और इसके लिये कई साधन हैं।

इतिहास का दृष्टान्त है। अकबर को यह खतरा पैदा हो गया कि जयसिंह का राज आगरे तक आ गया है। अगर आगे बढ़ गया तो मुझसे भी दो-दो हाथ करेगा। उसने जयसिंह को बुला भेजा। जयसिंह की मां को बड़ी चिन्ता हुई ! 16 वर्ष की उम्र थी जयसिंह की, अकबर इतना बड़ा सम्राट। उसके सामने कोई जवाब इसे न आया तो मुश्किल हो जाएगी। वह उसे समझाने लगी कि वह ऐसे पूछे तो ऐसे जवाब देना, ऐसे पूछे ऐसे। बहुत तरीके बताए। जयसिंह तंग आकर मां से बेला कि अगर वह मुझसे ऐसा सवाल पूछे जो तूने मुझे न बताया हो तो मैं क्या जवाग दूंगा ? मां ने कहा, अब मैं तुझे नहीं बताऊंगी। तू होशियार हो गया है। जयसिंह अकबर के दरबार में गया। अकबर ने उसके दोनों हाथ पकड़ कर कहा, जयसिंह ! तू मेरे साथ लड़ने की तैयारी कर रहा है ? जयसिंह ने कहा, महाराज सुनिये। हमारी लाडली बेटी घर के चिराग़ की तरह पलती है। लेकिन जब हम उसका हाथ किसी लड़के के हाथ में दे देते हैं, और वह उसका हाथ पकड़ लेता है, फिर हम निश्चिन्त हो जाते हैं। महाराज ! आपने तो मेरे दोनों हाथ पकड़ लिये हैं। फिर मुझे क्या चिन्ता होगी। इतना कहना था कि दरबार में एक नई लहर आ गई। जयसिंह के सब अपराध माफ, और उसको जागीर देकर वापस कर दिया। यह थी एक कहानी - धर्म शास्त्र का निचोड़। आप जिसको पाना चाहते हो, वह तब तक मिल नहीं सकता जब तक आप ख़ालिस होकर अपने आपको किसी के हवाले न कर दें। आप हाथ समर्पित करते हैं तो वह आपके जीवन का बोझ उठा लेता है। अगर आप जीवन समर्पित कर दें तो आपको क्या कुछ न देगा भगवान।

आप समर्पित नहीं करते। आप तो लड़की की तरह हो भगवान की। लड़की जब बाप के घर आएगी, रोएगी, आंसू बहाएगी, बहुत कुछ कहेगी। लेकिन जाती दफ़ा देखेगी कि

मेरे बाप ने मुझे क्या दिया। तुम भी उस लड़की की तरह आंसू तो बहाते हो, पूजा-पाठ भी करते हो, सेवा भी, मगर जाते हुए सोचते हो कि हमें मिला क्या ? हमारा मुकदमा जीता कि नहीं, हमारी दुकान चली कि नहीं ? याद रखो लड़की को दहेज़ दिया जाता है, अधिकार नहीं दिया जाता। लड़के को कुछ नहीं दिया जाता, अधिकार दिया जाता है। क्यों ? लड़का लाता है बाप के घर में, लड़की लाती नहीं, ले जाती है। यह हमारी हालत है। भगवान के मन्दिर में जाकर तुमने कुछ मांगा होगा। तुम्हें कुछ दहेज मिल गया होगा, मगर भवान के मन्दिर का अधिकार प्राप्त नहीं होगा। अगर अधिकार चाहते हो तो वहां से लेने की इच्छा मत करो। वहां तो समर्पित करो, वहां तो दो अपने-आप को, तभी कुछ मिल सकता है।

हरिदास चैतन्य तानसेन के गुरू थे। अकबर ने कहा, तानसेन कभी अपने गुरू के दर्शन भी कराओ। तानसेन कहने लगा, महाराज, वह किसी को दर्शन नहीं देते। अकबर ने कहा, ऐसा कभी हो सकता है ? 'तेल तमा जाको मिले तुरत नरम हो जाए।' अकबर ने सवा मन लड्डू और सवा लाख का सोने का कण्ठा अपने आदमी के हाथ भेजा कि अकबर बादशाह ने भेजा है, आपके भगवान के लिये। हरिदास चैतन्य ने कहा कि मेरा भगवान भूखा नहीं, न उसको सुन्दर बनने की इच्छा है। यह कहकर मुंह फेर लिया। उपहार लाने वाला वापस लौट गया। बादशाह से बोला, महाराज, उन पर धन सम्पत्ति का कुछ असर नहीं होता। अकबर ने सोचा, जो धन की इच्छा से ऊपर है वह जरूर महात्मा है। तानसेन से कहा, मैं उनका संगीत सुनना चाहता हूं। तानसेन ने कहा, महाराज, आपको नंगे पैरों वहां चलना होगा। गए। एक झाड़ी के पीछे अकबर को छुपा दिया। तानसेन ने कुटिया का दरवाजा खटखटाया। महाप्रभु बैठे थे। तानसेन ने तानपुरा उठाया और कहने लगा, महाराज मैं आपकी सेवा में एक गीत रखना चाहता हूं। गीत गाया। जान बूझकर कुछ गलती कर दी। गुरू से न रहा गया। तानपुरा पकड़ा और गाना शुरू किया। इतनी मीठी आवाज थी कि अकबर उसकी मिठास में पागल हो गया और बेहोश हो गया। तानसेन ने आकर देखा। पानी लाकर दिया। अकबर ने आंख खोली। कहने लगा, कितना मधुर संगीत है ! तुम ऐसा क्यों नहीं गाते ? तानसेन ने कहा, मैं आपके लिये गाता हूं, और उसमें मेरा कुछ स्वार्थ है। वह उसके लिये, प्रभु के लिये गाते हैं। उनका कोई स्वार्थ नहीं।

यह खालसा पन की बात है। हमारे मन में खालसपन आ जाए और हम समर्पित कर

दें अपने आपको तो काम बन जाए। महावीर भगवान कहते हैं कि जो मेरी आज्ञा में अपने आपको समर्पित करता है, वही परम् शक्ति को पाता है। हम कैसे साधना करते हैं इसकी ? हमारे जैन आचार्य हुए, उन्होंने विधान किया है, तारा, विप्रा, बला, प्रभा, कान्ता-दृष्टियों के भेद बताए हैं। भगवान महावीर ने बताया है कि जब हम किसी एक उदगल पर पूरी दृष्टि जमा देते हैं, शरीर की आसक्ति को भुलाकर अपने आपको लवलीन कर देते हैं, तब प्रकाश दिखाई देता है। इसके बाद फिरा विप्रा और उसके बाद दीप्ति (ज्योति) आ जाती है। इसके बाद बला में सारे सिद्ध पुरूष सामने आ जाते हैं। फिर कान्ता, आपकी आत्मा की कान्ति चमक उठती है। आप सूक्ष्म जगत में चले जाते हो। आपके साथ सारी ऋद्धि-सिद्धि जुड़ जाती है। बीज बोओगे, घास उगेगा। योगी तो योगी ही होते हैं, जैन हों, सिख हों। निद्रा में सब भेद मिट जाते हैं, इसी तरह बेहोशी में भेद जाता रहता है। समाधी की हालत में भी भेद नहीं रहता है। सच में भेद नहीं रहता। पचास हजार लड़कों को एक सवाल हल करने को दें, जिनके उत्तर सही होंगे उनमें भेद नहीं होगा। गलत उत्तर वालों में अलग-अलग मतलब और भेद होगा। और भेद सब मन ने पैदा किए हैं।

✦ ✧ ✦

हजूर बाबा सावनसिंह जी महाराज और राधास्वामी मत

भगत कुन्दन लालजी, पानीपत

(भगत कुन्दनलाल जी एक प्रमुख पुराने सत्संगी और श्री हजूर बाबा सावनसिंह जी महाराज के सच्चे सेवकों में से हैं, जिन्होंने जीवन का बहुत बड़ा हिस्सा श्री हजूर महाराज के चरणों में गुजारा है। भगत कुन्दनलाल जी ने यह मजमून 26 जुलाई शाम के भण्डारा समारोह की सत्संग सभा में संगत के सामने प्रस्तुत किया था।)

इसमें कोई शक नहीं कि डेरा बाबा जयमलसिंह अर्थात् डेरा ब्यास में सत्संगियों के आपस में मिलते समय और हजूर महाराज को नमस्कार करते वक्त भी राधास्वामी शब्द बोला जाता था और यह एक प्रकार का रिवाज़ सा बन गया था, नहीं तो हजूर महाराज के दिए हुए नाम के पांच अक्षरों में राधास्वामी नाम का कोई अक्षर सुमिरण के लिये नहीं दिया गया। हजूर महाराज का असल मत क्या था, इसका पता इन चन्द घटनाओं से लगेगा जो मैं अर्ज़ करने लगा हूं।

1. हजूर अपने सत्संगों में प्राय: यह कहा करते थे कि मेरा कोई मत नहीं है। अगर परमात्मा हिन्दू है तो मैं हिन्दू हूं, और अगर परमात्मा मुसलमान हे तो मैं मुसलमान हूं, अर्थात् मेरा मत वह है जो खुद मालिक का है। मैं कोई नया मत बनाने नहीं आया हूं, न ही किसी पुराने मत को बिगाड़ने आया हूं।

जब 1931 ई. की मरदुम शुमारी (जन संख्या की गणना) हो रही थी तो बहुत से सत्संगियों ने हजूर को चिट्ठियां लिखीं और इजाज़त चाही कि उनको मज़हब के खाने में अपने को 'राधास्वामी' लिखवा कर अपनी संख्या का पता करने का अवसर दिया जाए। चूंकि बारी-बारी हरेक को चिट्ठी का उत्तर नहीं दिया जा सकता था, इसलिये बाबा जयमलसिंह जी महाराज के भण्डारे के अवसर पर हजूर महाराज ने खुले आम यह ऐलान (घोषणा) किया, ''मेरा कोई मज़हब नहीं है। मैं क्यों कि सिखों के घर पैदा हुआ और अब तक जितनी मरदुम शुमारियां (जनसंख्या गणना) हुई उनमें अपने को मैं सिख लिखवाता चला आ रहा हूं। इस बार भी अपने को सिख लिखवाऊंगा। आप लोगों में जो आर्य समजी हैं वह अपने आपको आर्य समाजी लिखवाएं, सनातनी अपने को सनातनी, मुसलमान मुसलमान और ईसाई अपने को ईसाई लिखवाएं। जो कोई मज़हब आपका सत्संग में आने से पहले था, वही मज़हब मरदुम शुमारी में लिखवाएं। मैंने कोई फ़ौज भरती नहीं करनी है जो तादाद का पता करूं। मेरा तुम्हारा रिश्ता रूह का है, और रूह

का कोई मजहब नहीं है।'' इस खुले आम ऐलान के बाद कोई यह नहीं कह सकता कि हजूर बाबा सावनसिंह जी महाराज राधास्वामी थे।

2. मेरी अर्ज़ को कबूल करते हुए हजूर महाराज ने 1939 ई. में अपना दौरा हमारे जिला मटंगुमरी के एक कस्बा 'मल्का हांस' में रखा। वहां हमारे सम्प्रदाय 'प्रणामी मत' की एक पुरानी गद्दी है। उस समय जो महन्त वहां गद्दी पर बैठे हुए थे वह, जैसा कि हजूर (बाबा सावनसिंह जी) ने फरमाया, एक बड़े पवित्र आत्मा और प्रभु प्राप्ति के अभिलाषी थे। जब हजूर महाराज जी से उनकी बातचीत हुई तो उन्होंने हजूर से कहा, आप जो भी फरमा रहे हैं, वह बिल्कुल हमारे प्रणामी मत के ग्रन्थों के मुताबिक (अनुसार) है। परन्तु यह नया 'राधास्वामी मत' हमारे भगत कुन्दनलाल जी और रंगलाल जी ने क्यों अपनाया, और 'प्रणामी मत' को क्यों छोड़ा ? हजूर महाराज ने महन्त साहब को जवाब देते हुए फ़रमाया, ''कुन्दनलाल और रंगलाल से पूछो, (यह दोनों आपके सामने मौजूद हैं) कि मैंने कब यह कहा है कि आप अपना 'प्रणामी मत' छोड़ दें। बल्कि मैंने तो उनसे यह कहा है कि तुम्हारी वाणी में सब कुछ मौजूद है। उस पर अमल करो। केवल बाणी का पढ़ना या सुनना या उसकी व्याख्या काफी नहीं है, बल्कि जो कुछ बाणी कहती है उस पर अमल करो। और इनको एकान्त में बैठकर अमल करने का तरीका बतलाया है। प्रणामी बाणी में आया है, ''सब सियानों का एक मत कहिए, अंजान देखे है जुदाई।'' जैसे कालेज में एक प्रोफेसर हमारे रस्म-रिवाजों और हमारी सोसायटी के कानूनों से लाताल्लुक (दूर) रह कर हमें अंग्रेजी पढ़ा देता है, उसी प्रकार सन्त जो अमल का तरीका बतलाते हैं वह हरेक देहधारी इंसान के लिये होता है। मुसलमान उस पर अमल करे, हिन्दू करे, ईसाई करे, सिख करे, लाभ हरेक को एक ही जैसा होगा। ऐसे वाक्य अपने कानों से सुनने के बाद किसी शक की गुंजायश नहीं रहती और कहना पड़ता है कि हजूर महाराज मत-मतान्तरों के झगड़ों से बहुत ऊंचे थे और उनकी तालीम को कोई ख़ास लेबल (ठप्पा) लगाकर प्रचार करने या समझाने से हजूर का असल विचार और उद्देश्य समाप्त हो जाएगा।

सम्पादकीय नोट : भगत कुन्दनलाल जी का यह संदेश इस सच्चाई को सिद्ध और प्रकाणित करता है कि श्री हजूर बाबा सावनसिंहजी महाराज राधास्वामी मत से संबंधित नहीं थे, न ही उन्होंने राधास्वामी मत का प्रचार किया। उन्होंने तो इस बात की खास ताकीद की थी कि हर कोई अपने-अपने मज़हब में रहे और अपनी समाज परम्परा का पालन करते हुए नाम की कमाई करे। आज उनके आध्यात्मिक उत्तराधिकारी और गुरूमुख पुत्र, श्री सन्त कृपालसिंह जी महाराज भी उसी तालीम का प्रचार कर रहे हैं, जो किसी समाज या मज़हब से बंधी हुई नहीं बल्कि सब मनुष्य मात्र के लिये है। ❑

हज़ूर सन्त कृपालसिंह जी महाराज का सेवादारों को संदेश

प्रभु या सत्गुरू की सच्ची सेवा

प्रभु या सत्गुरू की सेवा करने में कौन समर्थ है। वही, जिस पर प्रभु कृपा करे। इसके अलावा कोई भी उसकी सेवा नहीं कर सकता। जो प्रभु या सत्गुरू की सेवा करता है, उसका सिद्धांत क्या है ? जिनसे वह अपनी सेवा करवाना चाहता है, उनको वह अपने पास बुलाता है, अपने मिशन में, अपने घर में या किसी और रूप में। कोई शब्द या नाम के सम्पर्क में तभी आता है, जब प्रभु चाहे। यह उस मानव चोले के द्वारा मिलता है, जिस पर प्रभु प्रकट है। उसमें प्रकट प्रभु ही दूसरों को नाम या शब्द का अनुभव देता है। यह नाम या शब्द हम सबके अंतर बसी नियंत्रण शक्ति है। प्रभु की दया होने पर ही हमें नामदान मिलता है। यह तथ्य कि किसी इंसान को नामदान मिल चुका है, दर्शाता है कि प्रभु ने उस पर अपनी दया बरसाई है और प्रभु अपने बच्चों को अपने पास बुलाना चाहता है। इस उद्देश्य के लिये वह उस मानव चोले से सम्पर्क कराता है, जिसमें वह प्रकट है। सबसे बड़ी सेवा अपने आपको, अंतर में बसी नाम की शक्ति से सम्पर्क कराना है जो कि ज्योति और श्रुति है। यह निरोल प्रभु से वापस मिलने का रास्ता है।

अब प्रश्न उठता है उनके बारे में जो सीधे सत्गुरू के मार्गदर्शन में सेवा करते हैं, उसके मिशन में या उसके घर में ? यह उसमें प्रकट प्रभु ही चुनता है, इंसान का पुत्र नहीं। जो लोग उसके मिशन में काम करने के लिये चुने जाते हैं, वे उसी की दया से चुने जाते हैं। हर कोई उसके मिशन में काम करने के लिये नहीं चुना जाता ना ही उसके नज़दीक संपर्क में आ सकता है। जब प्रभु किसी को सत्गुरू के नज़दीक लाना चाहता है, तो प्रभु उसे उस स्थिति में ला खड़ा करता है, जहां से वह सत्गुरू की सीधी सेवा कर सके, उसके घर में या उसके मिशन में। यह प्रभु की ही कृपा है। तो वही प्रभु या सत्गुरू की सेवा कर सकता है, जिसे प्रभु स्वयं चाहे। सिद्धांत यह है कि पहले उसे नामदान दिया जाता है। जिनको नामदान दिया जाता है, वह इसलिये दिया

जाता है क्योंकि प्रभु उनको अपने पास बुलाना चाहता है, पहले आत्मा के रूप में, फिर बाहरी तौर से। उसके लिये, सत्गुरू कहते हैं कि हम भजन-अभ्यास में अधिक से अधिक समय अवश्य दें, ताकि हम उसके नूरी स्वरूप से अंतर में फायदा उठा सकें। उससे दिल से दिल की बात करें और सीधे उसका मार्ग दर्शन पाएं। यह एक पक्ष है।

दूसरा पक्ष यह है कि बाहरी सेवा भी उन्हीं को मिलती है, जिन्हें प्रभु चुनें। उनको सत्गुरू के मिशन का काम करने को दिया जाता है। दूसरे लोग उसके अधिक करीब आकर सीधे उसके मार्गदर्शन में कार्य करते हैं। यह सब उसी की दया है जोकि हमें उसके निकट लाती है। जो लोग इस कार्य के लिये चुने जाते हैं, वे सबसे ज्यादा भाग्यशाली हैं। कभी-कभी हमें कोई कार्य सौंपा जाता है और हम सोचने लगते हैं कि हम उस सेवा के कर्ता-धर्ता हैं। स्वाभाविक है कि हमारे अंदर बसी खुदी (अहं) का भाव अपना प्रभाव दिखाता है। यह सेवा नहीं है। सत्गुरू की सेवा, ऐसा कार्य करना है, जैसा सत्गुरू चाहे। केवल वही सेवा कहलाती है, जिससे सत्गुरू प्रसन्न हो, कोई और नहीं। जो लोग किसी ना किसी तरीके से सत्गुरू के नज़दीक आते हैं, उनकी थोड़ी सी खुदी अपना प्रभाव खुद-ब-खुद दिखाती है। वे कहते हैं, 'मैं यह या वह काम कर रहा हूं।'' यह अहं भाव इंसान के हर कार्य में मधुरता समाप्त कर देता है। वह आदेश देगा, अपना जोर लगायेगा। वह अपने आपको सत्गुरू के हाथों की कठपुतली नहीं समझता है। पर हमारी सेवा हमेशा निष्काम ही होनी चाहिये। अत: जिनको सत्गुरू की, सीधे उसी के मार्गदर्शन में, एक या दूसरे रूप में सेवा करने के लिये चुना गया है, चाहे यहां या कहीं और, वे भाग्यशाली हैं।

कुछ लोगों को उसके बहुत नज़दीक काम करने के लिये चुना जाता है। यह सत्गुरू की दया है, जो उसमें बसे प्रभु से आती है। लोग प्रभु या सत्गुरू की सेवा तभी कर सकते हैं, जब प्रभु चाहे। जो लोग चुने जाते हैं, वे प्रभु की खास दया के पात्र हैं। पर हम क्या करते हैं ? हम कभी-कभी इसको व्यापार समझ लेते हैं। हम किसी न किसी रूप में मुनाफा चाहते हैं। जो लोग दूर से आकर कुछ समय सत्गुरू के साथ बिताते हैं, उनकी तुलना हमारे सत्गुरू बछड़े से करते थे, जो गाय के पास आकर केवल उसका दूध पीता है। जबकि जो लोग सत्गुरू के हमेशा नज़दीक रहते हैं, उनकी तुलना

चिचड़ी से की जाती थी, जो दुधारू पशुओं के स्तन से खून चूसती है, पर दूध नहीं लेती। अगर हम प्रभु या सत्‌गुरू की सेवा करना चाहते हैं, तो यह केवल उसकी दया और इच्छा से ही हो सकता है। इसे कोई और नहीं कर सकता। अगर कोई सत्‌गुरू की सेवा के लिये चुना जाता है, तो यह प्रभु की दया है। जब आप किसी एक उद्देश्य के लिये चुने जाते हो, तो उसे चुपचाप, खुशी-खुशी, प्रेम और निष्काम भाव से करो। प्रभु का धन्यवाद करो कि उसने आपको उस काम के लिये चुना और उसने अपने मिशन के कार्य में आपको भी शामिल किया। यह उसी की दया है।

आपको अपने अंतर में स्थित सत्‌गुरू (प्रभु) के प्रति सच्चा रहना चाहिये। जब आप यह देखेंगे कि वह आपके अंतर में है, तो आप कोई भी गलत काम या कुछ भी, जो उसकी इच्छा के विरूद्ध है, करने से डरेंगे, चाहे आप उसकी मौजूदगी में हों या उसकी नामौजूदगी में। अगर आप इस तरह से करेंगे तो आप सदैव सत्‌गुरू के ही बारे में सोचेंगे और उसका नतीजा होगा, ''जैसा तुम सोचोगे, वैसा तुम बनोगे।'' धीरे-धीरे तुम पाओगे कि, ''यह प्रभु है जो मुझमें काम कर रहा है, मैं नहीं।'' सेंट पॉल ने कहा, ''यह मैं हूं, अब मैं नहीं, यह ईसा मसीह है जो मुझमें रहता है।'' यही परम लक्ष्य है। तो जो लोग सत्‌गुरू के मार्गदर्शन में सेवा का काम करने के लिये चुने जाते हैं, उन पर प्रभु की दया है। उन्हें धन्यवादी होना चाहिये कि उन्हें सेवा का मौका दिया गया। वे निष्काम सेवा करें, हमेशा यह सोचकर कि वे सत्‌गुरू की सेवा कर रहे हैं, क्योंकि सत्‌गुरू ने ही उन्हें सेवा के लिये चुना है। प्रभु या सत्‌गुरू की सेवा का सिद्धांत यह है कि तुम्हें नामदान मिल चुका है, सत्‌गुरू से नज़दीकी और उसके मार्गदर्शन में सेवा का अवसर मिल चुका है। यह उसकी खास दया है। हमें अपने आपको उस सेवा के लायक बनाना चाहिये और उससे पूरा फायदा उठाना चाहिये। हम पूरा फायदा निष्काम भाव से सेवा करके ही पा सकते हैं, यह समझकर कि हम उसके हाथों की कठपुतली हैं। कोई भी सेवा जो सत्‌गुरू की इच्छा और खुशी से की जाती है, जिसमें अपने मन की कोई दखल-अंदाजी नहीं होती, वह पूरा फल देती है। जो लोग सत्‌गुरू की देखभाल में सेवा के लिये चुने गए हैं, उन्हें इसके लिये शुक्रगुजार होना चाहिये। नहीं तो यह बंधन का कारण बनेगी और तब चाहे आप सत्‌गुरू के नज़दीक रहें, आप

पूरा फायदा नहीं उठा पायेंगे।

तो आज का विषय है, वे लोग, जिनको सत्गुरू की दया से नामदान मिल चुका है। वे नियमित रूप से सावधानी बरतकर, जो भी उन्हें मिला है, उसे आगे बढ़ाये ताकि उनका आंतरिक विकास हो, वे अंतर में नूरी स्वरूप से मिलें और उससे दिल से दिल की बात करें। यह एक पक्ष है। दूसरा पक्ष है कि कभी-कभी आप एक कार्य के लिये चुने जाते हैं। उसका कार्य क्या है ? प्रभु के सभी बच्चों को इकट्ठा करना। आप दूसरे लोगों को उदाहरण बनकर दिखाएं। उदाहरण (अमल) उपदेश से बढ़कर है। अगर आपको उसके मिशन का कोई कार्य सौंपा जाए, तो आपको उसे करना चाहिये, चाहे यहां उसके सान्निध्य में या कहीं और। जो एक या दूसरे कार्य के लिये चुने जाते हैं, बहुत भाग्यशाली हैं। पर वे अपना काम बिना अपनी खुदी (अहं) की दखल-अंदाज़ी के करें। वे इसे सत्गुरू को खुश करने के लिये ही करें, बिना किसी फल की इच्छा के। यह सत्गुरू ने देखना है कि वह क्या देना चाहता है, व इंसान किस फल के लायक है और उसके लिये क्या बेहतर है। जब आप सत्गुरू की सेवा करते हो तो स्वाभाविक है, आपको फल मिलेगा। वह आपको क्या फल देगा ? वह तुम्हें दुनिया से आज़ाद कर देगा और फिर प्रभु से हमेशा के लिये मिला देगा। अगर सत्गुरू आपका भला चाहता है तो मेरे ख्याल से, यह प्रभु ही है जो आपका भला चाहता है।

जिनको नामदान दिया जाता है, उन पर प्रभु की खास दया होती है। नामदान का लक्ष्य हमारी आत्मा को, ज्योति और श्रुति के द्वारा (जो निरोल प्रभु से उद्गीत होती है), वापिस हमारे पिता की गोद में पहुंचाना है। और अधिक दया होती है, जब एक नामदान पाये व्यक्ति को किसी सेवा के लिये चुना जाता है। जो लोग सत्गुरू के नज़दीक आना चाहते हैं, उनको कुछ खास काम, कुछ ड्यूटी करने को दी जाती है, बिना किसी अहं भाव के, तो इसका फल मिलेगा। जब तुम देखोगे कि सब कुछ सत्गुरू की इच्छा और खुशी से हो रहा है, तो स्वाभाविक है, तुम उससे एकाकार हो जाओगे। तुम्हारी अपनी कोई इच्छा नहीं होगी। उसकी इच्छा ही तुम्हारी इच्छा होगी और उसकी इच्छा तो प्रभु की इच्छा है। अत: तुम में से हर एक को धन्यवादी होना

चाहिये कि आपको नामदान मिल चुका है। तुम्हें निरोल प्रभु से वापिस मिलने के रास्ते पर खड़ा कर दिया गया है। जब तुम्हें उसने किसी खास सेवा के लिये चुन लिया तो तुम और अधिक भाग्यशाली हो गये, पर उसे पूरी निष्ठा, भक्ति और निष्काम भाव से निभाओ। अगर तुम ऐसा करोगे तो वह तुम्हें क्या देगा ? वह तुम्हें अपना ही स्थान दे देगा।

गुरू हरगोविन्द, सिखों के छठे गुरू, ने एक बार किसी को 'जपजी' (सिखों के धर्मग्रंथ, गुरू ग्रंथ साहिब का एक भाग) का पाठ करने को कहा। उन्होंने कहा, ''जो भी इसका पाठ एकाग्रचित होकर करेगा, वह मुझसे अपनी दिली इच्छा मांग सकता है। पर पाठ करते समय कोई और ख्याल बीच में न आए। पाठ एकाग्रचित होकर ही करना चाहिये।'' एक आदमी ने जपजी का पाठ करना शुरू किया। वह एकाग्र मन से पाठ करता रहा और जब वह पाठ समाप्ति के निकट था तो उसके दिल में ख्याल आया कि गुरू साहब के पास जो सुंदर घोड़ा है, वह मुझे मिल जाए। पाठ खत्म होने पर उसने घोड़ा पाने की इच्छा ज़ाहिर की। गुरू साहिब ने वह घोड़ा उसे दे दिया और उससे कहा, ''देखो, अगर तुम घोड़े की इच्छा नहीं रखते तो मैं तुम्हें अपनी गद्दी ही दे देता।'' तुम समझे ? जो निष्काम भाव से, एकाग्रचित होकर काम करते हैं, वे सत्गुरू से एकमेक हो जाते हैं। जो कुछ और चाहते हैं, वह भी दे दिया जाता है, पर मैं कहूंगा कि सत्गुरू की निष्काम सेवा करने वाला सबसे अधिक भाग्यशाली है। पर कौन इसे करता है ? जिस पर प्रभु की दया हो।

अत: सर्वप्रथम, तुम भाग्यशाली हो कि तुम्हें नामदान मिला। जिनको सत्गुरू के मिशन में काम करने के लिये चुना गया और जिनका सत्गुरू से सीधा संबंध है, वे और अधिक भाग्यशाली हैं। पर याद रखो, यह सेवा निष्काम होनी चाहिये। अपने अहं का इसमें कोई अंश ना हो। क्योंकि खुदी या अहं बीच में आ जाती है, इसलिये पूरा फायदा उठाने की अपेक्षा आप बहुत कम या बिल्कुल फायदा नहीं उठाते। अत: धन्यवादी रहो कि तुम्हें नामदान मिला। जो लोग सेवा करते हुए पूरा फायदा उठा रहे होते हैं, कभी-कभी सोचते हैं कि वे सत्गुरू से ऊपर हैं। हो सकता है कि आप इतने सच्चे हों, जितना सत्गुरू है, पर आप सत्गुरू से ऊपर नहीं हो सकते। यह आपका अहं है जो

कि आपको आपकी औकात से बढ़ा-चढ़ाकर दिखाता है। नतीजा यह होता है कि जो लोग इस तरह से काम करते हैं, वे पूरा फायदा नहीं उठा पाते। नौकर, नौकर है और मालिक, मालिक है। अगर मालिक आपकी सेवा ना स्वीकारे तो क्या आप उससे जोर जबरदस्ती कर सकते हैं ? कभी-कभी हम नामदान के समय दी गई पूंजी का पूरा फायदा नहीं उठाते। इसलिये नामदान का और तुम्हें दी गई इस या उस सेवा का पूरा फायदा उठाने के लिये तुम्हें अवश्य ही निष्काम भाव से और एकाग्रचित होकर कार्य करना होगा। इस तरह से कार्य करने पर तुम सत्गुरू से एक-मेक हो जाओगे।

✦ ✧ ✦

रूहानी सत्संग नि:शुल्क भेजे जाते हैं।
Ruhani Satsangs are sent Free of Cost.